Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 55 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 08 अगस्त 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

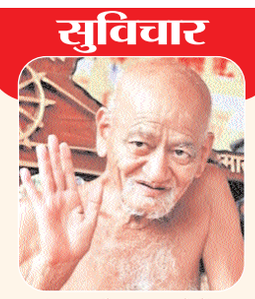

जिस प्रकार अंधकार और प्रकाश दोनों इस धरती पर है, वैसे ही धर्म और अधर्म भी इस धरती पर है।

Obserrance and non-obserrance of religion both exit on this earth like light and darkness.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

सोरांव पुलिस ने पकड़ा दो करोड़ का गांजा

प्रयागराज। सोरांव थाने की पुलिस ने मंगलवार को एक गांजा तस्कर को गिरफ्तार किया है। उसके पास से 762.12 किलो गांजा पकड़ा गया है। इसकी कीमत 2. करोड़ रुपए है। गांजा उड़ीसा से तस्करी कर लाया गया था। यूपी और बिहार के कई शहरों में इसकी सप्लाई की जानी थी। पुलिस ने चेकिंग के दौरान एक ट्रक को रोका। उसकी तलाशी ली गई। इस दौरान गांजा बरामद हुआ। पुलिस पकड़े गए तस्कर से पूछताछ कर रही है। डीसीपी गंगा नगर अभिषेक भारती ने बताया, पुलिस को मुखबिर से गांजा तस्करों के बारे में इनपुट मिले थे। जिसके बाद सोरांव पुलिस गांजा तस्करों की लोकेशन ट्रेस कर रही थी। सोरांव क्षेत्रान्तर्गत ग्राम लुसनपुर स्थित पुलिया के पास से घेराबंदी कर आरोपी बलकार सिंह निवासी समाना मंडी पटियाला पंजाब को गिरफ्तार किया गया। ट्रक नंबर एचपी 11 बी 3071 में 762.12 किलो गांजा बरामद हुआ। ट्रक में एक अतिरिक्त नंबर प्लेट बीआर 01 जीएफ 9291 रखी थी जो जरूरत पडने पर इस्तेमाल की जाती। डीसीपी ने बताया कि गांजा उड़ीसा से लाया गाय था। प्रयागराज में सोरांव, हंडिया, फूलपुर समेत शहर के कई इलाकों में सप्लाई होता।

3 दिन से लापता थे देवर-भाभी, जंगल में पेड़ से लटके मिले शव

खंडवा। एक प्रेमी जोड़े ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। दोनों रिश्ते में देवर-भाभी हैं और तीन दिन से लापता थे। परिवार वाले उनकी तलाश में जुटे थे कि मंगलवार सुबह उनके शव जंगल में पेड़ से लटके मिले। फिलहाल, यह बात सामने आई है कि दोनों प्रेम-प्रसंग में थे। देवर भी शादीशुदा था। इधर, महिला का पति पुणे में मजदूरी करता हैं।घटना आदिवासी बाहुल्य खालवा क्षेत्र के गांव गुलाईमाल की है। जानकारी के मुताबिक, फांसी लगने वाले गांव का युवक और एक महिला हैं। महिला उसके चचेरे भाई की पत्नी हैं। युवक और महिला का देवर-भाभी का रिश्ता है। लेकिन दोनों ने इस रिश्ते को शर्मसार कर दिया।? काफी समय से दोनों प्रेम-प्रसंग में थे। हैरत की बात यह है कि महिला के 4 बच्चे हैं। वहीं युवक की दो संतानें हैं।

शाही मस्जिद आगरा में श्रीकृष्ण विग्रह मामले में अब 12 को सुनवाई

प्रयागराज । इलाहाबाद हाई कोर्ट आगरा स्थित शाही मस्जिद में श्रीकृष्ण के विग्रह होने संबंधी मामले में अब 12 अगस्त को अगली सुनवाई करेगा। न्यायमूर्ति मयंक कुमार जैन की अदालत ने सोमवार को भोजनावकाश के बाद इस मामले में सुनवाई की और वाद संख्या तीन की पत्रावली दुरुस्त करने का निर्देश दिया। आगरा स्थित शाही मस्जिद की सीढ़ियों में कथित रूप से औरंगजेब के शासनकाल में 1670 में दफनाए गए भगवान श्रीकृष्ण (कटरा केशव देव) के विग्रह के सर्वे की मांग की गई है। चार जुलाई को हुई सुनवाई में न्यायमूर्ति मयंक कुमार जैन ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) से जवाब मांगा था। एडवोकेट कमिश्नर की नियुक्ति की मांग भी की गई है।

छत्तीसगढ़ में कई जगहों पर सीबीआई का छापा

कांग्रेस नेता और राज्यपाल के पूर्वसचिव के बंगले पर भी रेड

रायपुर/ संवाददाता

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर समेत प्रदेश के जिलों में आज बुधवार को सीबीआई ने छापेमारी की है। प्रदेश में लोक सेवा आयोग (सीजीपीएससी) फर्जीवाड़ा केस में सीबीआई ने रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग-भिलाई और धमतरी समेत कई जिलों में छापेमारी की है। यह छापेमारी सीजीपीएससी के आयोजित परीक्षा में गड़बड़ी और भ्रष्टाचार के आरोप पर कार्रवाई की गई है। सीबीआई की टीम ने राजभवन के पूर्व सचिव अमृत खलको के रायपुर स्वर्णभूमि स्थित आवास पर छापेमारी की है। उसके बेटे-बेटियों का भी राज्य सेवा भर्ती परीक्षा 2021 में चयन हुआ था। आरोप के अनुसार सीबिआई की वहां भी जांच के लिए पहुंची है। बिलासपुर में कांग्रेस नेता राजेंद्र शुक्ला के निवास पर सीबीआई का छापा पड़ा है। पांच से सात सदस्यीय सीबीआई की टीम पहुंची हुई है। यदुनंदन नगर और तिफरा स्थित पुराने और नए निवास में टीम मौजूद है। इसके साथ ही दस्तावेज खंगाले जा रहे हैं। सीजीपीएससी मामले में दर्ज एफआईआर के जांच के लिए सीबीआई ने छापेमारी की है। कांग्रेस नेता राजेंद्र शुक्ला के बेटे का भी मामले में नाम बताया जा रहा है। सीबीआई ने छत्तीसगढ़ में हुए पीएससी घोटाले में छापेमारी शुरू की है। जिसके तहत आज सीजी पीएससी भर्ती घोटाला मामले में सीबीआई की टीम ने धमतरी समेत कई जिलों में छापेमारी की है। इस दौरान पीएससी के पूर्व चेयरमैन टॉमन सिंह सोनवानी के निवास धमतरी जिले के सरबदा गांव स्थित में छापा मारा गया। दो गाड़ियों में 10 से 12 लोगो की टीम

आई और पूर्व चेयरमैन निवास के अंदर करीब 4 घण्टे तक रहने के बाद सीबीआई की टीम लौट गई। आपको बता दें कि छत्तीसगढ़ में पिछली कांग्रेस सरकार के दौरान पीएससी चयन में घोटाले का मामला सामने आया था।इसके साथ ही पूर्व चेयरमैन सोनवानी के परिवार के भी 3 लोगो का चयन पीएससी में हुआ था। जिसके चलते टॉमन सिंह पर घोटाला कर के अपने लोगो का चयन करने का आरोप है। दुर्ग में तीन स्थानों पर सीबीआई की टीम में छमापार कार्रवाई की है। भिलाई रिसाली में कांकेर में पदस्थ नक्सल डीआईजी कन्हैया लाल ध्रुव के निवास पर और राज्यपाल के पूर्व सचिव अमृत खलखो के निवास के ठिकानों पर दबिश दी है। राज्यपाल के सचिव रह चुके हैं अमृत खलखो कई जिलों में कलेक्टर भी रहे हैं। उनके भिलाई स्थित तालपुरी निवास पर सीबीआई की टीम पहुंचकर,घर की जांच की है। सूत्रों के मुताबिक घर पर अमृत खालको पूरा परिवार मौजूद था, जिनसे सीबीआई के अधिकारियो ने घोटाले में पूछताछ कर रही है। सीजीपीएससी में अमृत खलखो का बेटा और बेटी ने डिप्टी कलेक्टर के पद के लिए पीएससी परीक्षा में पास किया है। इसी तरह से कांग्रेस नेता राजेंद्र शुक्ला के बेटे ने भी सीजीपीएससी परीक्षा में डिप्टी कलेक्टर के लिए चयनित हुऐ है। वही रिसाली के निवासी नक्सल कन्हैया लाल ध्रुव के ठिकाने में सीबीआई की कर्रवाई चल रही है।

मंत्री ओपी चौधरी ने कांग्रेस पर किया हमला, कहा- अब सुशासन के दौर में भ्रष्टाचारी होंगे बेनकाब

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग भर्ती घोटाला मामले में सीबीआई ने आज सुबह पीएससी के पूर्व चेयरमैन टामन सोनवानी, राज्यपाल के पूर्व सचिव आईएएस अमृत खलको और कांग्रेस नेता राजेंद्र शुक्ला के निवास समेत कई स्थानों पर दबिश दी है. सीजीपीएससी भर्ती घोटाला मामले में छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग, भिलाई समेत कई शहरों में सीबीआई की छापेमार कार्रवाई चल रही है. इस बीच वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने एक्स पर एक पोस्ट किया है. उन्होंने लिखा है कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के पांच साल के शासनकाल में माफियाराज ने पीएससी में भ्रष्टाचार कर युवाओं के भविष्य को दांव पर लगा दिया. अब सुशासन के दौर में भ्रष्टाचारी बेनकाब होंगे.

टीएमसी सांसद पर शाह का तंज

कोई राज्य पश्चिम बंगाल का मॉडल नहीं अपनाना चाहेगा

नई दिल्ली। गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल की तृणमूल सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कोई भी राज्य वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) से निपटने में पश्चिम बंगाल के मॉडल का पालन नहीं करना चाहेगा। तृणमूल सांसद सौगत राय की संक्षिप्त प्रतिक्रिया में, जिन्होंने लोकसभा में कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार वामपंथी उग्रवाद से निपटने में सफल रही है और पूछा कि क्या केंद्र राज्य के मॉडल का अध्ययन करेगा और अन्य राज्यों में इसका अनुकरण करेगा। इसके जवाब में अमित शाह ने कहा कि नरेंद्र

मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को उन राज्यों के मॉडल को लागू करने में कोई समस्या नहीं है जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन मेरा मानना ??है कि कोई भी राज्य पश्चिम बंगाल मॉडल को लागू करना पसंद नहीं करेगा।

वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर के पास खोया गली चौक इलाके में दो जर्जर मकान ढहने के बाद बचाव अभियान जारी है।

तानाशाही लंबे समय तक नहीं चलती

हमारे देश को लेना चाहिए इससे सबक-महबूबा मुफ्ती

नई दिल्ली। बांग्लादेश मुद्दे पर पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में जो कुछ हुआ और हो रहा है, मुझे लगता है कि हमारे देश को उससे सबक लेना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि जब आपके पास एक बड़ी युवा आबादी होती है और आप उन्हें नजरअंदाज करने की कोशिश करते हैं- जब उन पर महंगाई और बेरोजगारी की मार पड़ती है, तो इस तरह की स्थितियां पैदा होती हैं। उन्होंने कहा कि आरक्षण कमजोर वर्ग के लिए अच्छा है, लेकिन यह जनसंख्या के अनुपात में होना चाहिए। हमें यह सबक

लेना चाहिए कि तानाशाही लंबे समय तक नहीं चलती। पूर्व सीएम ने कहा कि जब आप ऐसी नीतियां और कानून लाते हैं जो लोगों के खिलाफहैं और धैर्य की सीमा टूट जाती है, तो आपको शेख हसीना की तरह बचना होगा।

केजरीवाल ने एलजी को लिखा पत्र

15 अगस्त को इस बार दिल्ली में मंत्री आतिशी फहराएंगी झंडा...

नई दिल्ली । एजेंसी

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने जेल से दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना को एक पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने कहा है कि इस बार 15 अगस्त को दिल्ली में दिल्ली सरकार की मंत्री आतिशी उनकी जगह झंडा फहरायेंगी।तिहाड़ जेल में बंद अरविंद केजरीवाल ने एलजी को चिट्ठी लिखकर इस बात को सूचित किया है। अरविंद केजरीवाल ने जेल से एलजी वीके सक्सेना को चिट्ठी लिखी है जिसमें 15 अगस्त पर दिल्ली में झंडा फहराने को लेकर कहा गया है। चिट्ठी के मुताबिक, अरविंद केजरीवाल ने कहा है, 15 अगस्त

को मेरी जगह मंत्री आतिशी झंडा फहरायेंगी। दरअसल दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस के मौके पर हर साल दिल्ली सरकार छत्रसाल स्टेडियम में कार्यक्रम आयोजित करती है। जिसमें मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल झंडा फहराते हैं। लेकिन इस बार मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जेल में हैं। इसलिए उन्होंने अपनी कैबिनेट मंत्री आतिशी को झंडा फहराने के लिए अधिकृत किया है। गौरतलब है कि दिल्ली हाई कोर्ट ने बीते सोमवार को शराब घोटाला मामले में सीबीआई की ओर से सीएम केजरीवाल की गिरफ्तारी को सही ठहराया। हाई कोर्ट ने सोमवार को कहा कि सीबीआई के कृत्यों में कोई दुर्भावना नहीं है, जिसने दिखाया है कि आप सुप्रीमो कैसे उन गवाहों को प्रभावित कर सकते हैं, जो उनकी गिरफ्तारी के बाद ही गवाही देने का साहस जुटा सकते हैं। सीबीआई ने केजरीवाल को 26 जून को गिरफ्तार किया था जब वह ईडी द्वारा जांच किए जा रहे मनी लॉन्ड्रिंग मामले में वो न्यायिक हिरासत में थे।

कुएं का पानी पीने से 7 दिन में दो बच्चों सहित चार की मौत

प्रयागराज। गंगापार विकास खण्ड सा दा बाद के भदवां गाँव में कुएं का दूषित पानी पीने से 7 दिनों में 4 लोगों की मौत हो गई। घटना से खलबली मच गई है। गांव के 22 लोगों बीमार हैं। उनका इलाज अस्पतालों में चल रह है। मरने वालों में दो बच्चे भी हैं। बीमारों में भी बच्चों की संख्या ज्यादा है। बताते हैं कि कुएं का पानी इतना दूषित है कि बच्चों के पेट तेज दर्द होने लग रहा। साथ ही डायरिया समेत अन्य परेशानी हो रही है। हाल यह है कि उस गांव के लोग पड़ोस के गांव से पानी लाकर पीने को मजबूर हैं। मौतें और बीमार होने वालों के बढ़ते आंकड़ों से गांव में आक्रोश है। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने पहुंच जांच में जांच की।

फैंस का टूटा दिल

फाइनल से पहले बढ़े वजन के कारण अयोग्य करार दी विनेश

पेरिस/ एजेंसी

भारतीय महिला पहलवान विनेश फोगाट आठ अगस्त को महिलाओं की 50 किलोग्राम भारवर्ग कुश्ती का फाइनल मैच खेलने वाली थीं। हालांकि, इससे पहले उन्हें तगड़ा झटका लगा। बढ़े हुए वजन के कारण उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया गया। इस खबर ने फैंस का दिल तोड़ दिया। मंगलवार को खेले गए सेमीफाइनल मुकाबले में विनेश ने क्यूबा की लोपेज गुजमान को 5-0 से हराया था। वह ओलंपिक के फाइनल में पहुंचने वाली पहली महिला पहलवान बनीं थीं। पहले राउंड तक 1-0 से आगे थीं। फिर

आखिरी तीन मिनट में उन्होंने क्यूबा की पहलवान पर डबल लेग अटैक किया और चार पॉइंट अर्जित किए। इस बढ़त को उन्होंने अंत तक बनाए रखा और फाइनल में जगह बनाई। विनेश का इस ओलंपिक में सफर शानदार रहा है। सेमीफाइनल से पहले उन्होंने क्वार्टर फाइनल में यूक्रेन की लिवाच उकसाना को 7-5 से हराया था। विनेश के पास स्वर्ण पदक जीतने का मौका था। वह जिस लय में नजर आ रहीं थीं, उससे फैंस स्वर्ण पदक की कयास लगा रहे थे। हालांकि, अब वह इस मुकाबले से बाहर हो गई हैं। फाइनल में विनेश का सामना अमेरिका की सारा एन हिल्डब्रांड से मुकाबला होना था। सुनील गावस्कर ने कहा, मुझे लगता है कि यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण है। मुझे यह भी लगता है कि यह सबसे अनुचित है। मुझे उम्मीद है कि अधिकारी इस पर ध्यान देंगे कहा और इस पर कड़ा विरोध दर्ज करेंगे। क्योंकि यह शुरुआती दौर का मुकाबला नहीं है।

साय कैबिनेट की बैठक खत्म

देश का तीसरा बड़ा टाइगर रिजर्व छत्तीसगढ़ में बनेगा-साय

■ इस टाइगर रिज़र्व के गठन से बाघों की संख्या में वृद्धि की उम्मीद है, क्योंकि यह क्षेत्र उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा

रायपुर । संवाददाता

छत्तीसगढ़ का गुरुघासीदास - तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व देश का तीसरा बड़ा टाइगर रिजर्व होगा। छत्तीसगढ़ सरकार ने गुरुघासीदास - तमोर पिंगला को टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित कर लिया है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ में टाइगर रिजर्व की संख्या चार हो गई है। गुरु घासीदास नेशनल पार्क को साल 2021 में टाइगर रिजर्व बनाया गया था, लेकिन इसे विरोध के कारण अस्तित्व में नहीं लाया जा सका था। इस क्षेत्र में कई खदानें होने कारण नेशनल पार्क को टाइगर रिजर्व घोषित करने का नोटिफिकेशन कांग्रेस शासन काल में रुका हुआ था। छत्तीसगढ़ की पूर्ववर्ती बीजेपी सरकार ने ही गुरु घासीदास नेशनल पार्क और तमोर पिंगला सेंचुरी को मिलाकर टाइगर रिजर्व बनाने का ड्राफ्ट राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) को भेजा था। जिसके बाद एनटीसीए ने गुरु घासीदास नेशनल पार्क को टाइगर रिजर्व के रूप में मंजूरी दी। लेकिन कांग्रेस शासन में रिजर्व एरिया के कोल ब्लॉक, आइल ब्लॉक और मिथेन गैस ब्लॉक होने के कारण मामला अटक गया था। अब जब राज्य में पुन: भाजपा सरकार की वापसी हुई तो टाइगर रिजर्व बनने का रास्ता साफ हो गया।

छत्तीसगढ़ सरकार की मंत्रिपरिषद की बैठक में गुरुघासीदास - तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व गठित करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है एवं इसे टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित कर लिया है। इस टाइगर रिज़र्व के गठन से बाघों की संख्या में वृद्धि की उम्मीद है, क्योंकि यह क्षेत्र उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा। मौजूदा आंकड़ों के आधार पर, बाघों की संख्या में सुधार के लिए यह कदम आवश्यक था। नया टाइगर रिज़र्व बाघों के प्राकृतिक आवास को संरक्षित करेगा और उनकी सुरक्षा को बढ़ावा देगा। टाइगर रिज़र्व के गठन से ईको-पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे। गाईड, पर्यटक वाहन संचालन, और रिसॉर्ट्स के संचालन के साथ-साथ अन्य पर्यटन संबंधित सेवाओं से स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ होगा। राष्ट्रीय प्रोजेक्ट टाइगर ऑथोरिटी से अतिरिक्त बजट प्राप्त होगा, जो क्षेत्र के विकास और आजीविका सुधार के लिए उपयोगी होगा। गुरुघासीदास - तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व 2829.387 वर्ग किमी क्षेत्रफल में फैला देश का तीसरा बड़ा टाइगर रिजर्व होगा। आंध्रप्रदेश का नागार्जुनसागर श्रीसैलम टाइगर रिजर्व 3296.31 वर्ग किमी के साथ देश का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है। वहीं, असम का मानस टाइगर रिजर्व 2837.1 वर्ग किमी क्षेत्रफल के साथ देश दूसरा बड़ा टाइगर रिजर्व माना जाता है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का जनदर्शन कार्यक्रम आज...

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का लोगों से मेल-मुलाकात और उनकी समस्याओं के समाधान का साप्ताहिक कार्यक्रम जनदर्शन गुरुवार 8 अगस्त को होगा । मुख्यमंत्री निवास में आयोजित जनदर्शन में मुख्यमंत्री साय नागरिकों से सीधे संवाद करेंगे एवं उनकी समस्याओं से संबंधित आवेदन भी लेंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री निवास में जनदर्शन का आयोजन 27 जून से शुरू हुआ है। पूर्व में आयोजित जनदर्शन में बड़ी संख्या में नागरिकों ने हिस्सा लिया और मुख्यमंत्री को अपनी विभिन्न समस्याओं और मांगों से संबंधित आवेदन भी सौंपे। सभी आवेदनों को मुख्यमंत्री स्वयं देखे और इनका शीघ्र निराकरण करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिए जनदर्शन में दिव्यांग जनों को भी त्वरित सहायता प्रदान की गई। पिछले जनदर्शन में आए सभी नागरिकों को टोकन प्रदान किए गए। और उनके आवेदन जनदर्शन के पोर्टल में अपलोड किए गए हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, गुरूवार 08 अगस्त 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

शुभ निमित्त के आलंबन से जीवन में शुभ भावों की वृद्धि होती है : मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी

रायपुर। विवेकानंद नगर स्थित श्री संभवनाथ जैन मंदिर में आत्मोल्लास चातुर्मास 2024 की प्रवचन माला में जीवन में विशेषज्ञता हासिल करने का व्याख्यान जारी है। इसी कड़ी में बुधवार को रायपुर के कुलदीपक तपस्वी रत्न मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. ने कहा कि शुभ निमित्त के आलंबन से जीवन में शुभ भावों की वृद्धि होती है।जीवन में अशुभ भाव के निमित्त बहुत मिलते हैं,अशुभ भाव में ले जाने के लिए बहुत लोग प्रेरित करते हैं लेकिन जो विशेषज्ञ होता है वो शुभ निमित्त की पहचान करके अपने भावों में वृद्धि कर अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए निरंतर प्रयास करता है।

मुनिश्री ने कहा कि जैसे आपको चातुर्मास का शुभ निमित्त मिला, गुरु भगवंतो का योग मिला,प्रेरणा मिली और आपने सिद्धि तप स्वीकार किया। इससे आप अपनी आत्मा को शुद्ध करने तपस्या कर रहे हैं। ऐसे ही शुभ निमित्तों से आप में शुभ भावों की उत्पत्ति होती है, इसीलिए इन शुभ भावों का हमेशा सेवन करना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कि शुभ निमित्त मिलने से शुभ भाव बढ़ते हैं लेकिन विशेषज्ञता तभी है जब आपको शुभ भावों को ग्रहण करना आता हो। शुभ क्रिया करते-करते शुभ भाव आते हैं और अशुभ क्रिया करते-करते अशुभ भाव आते हैं। शुभ भाव को लाने के लिए अपने जीवन में शुभ निमितों को बढ़ाना चाहिए। क्रिया करते करते ही भाव वृद्धि होगी। इनके लिए शुभ आलंबन को पकड़ कर रखना होगा। हम आपको प्रेरित कर सकते हैं लेकिन शुभ निमित्तों को तो आपको ही पकड़ कर रखना होगा। सिद्धि तप का पारणा करने के बाद भी जीवन में नित्य तप अवश्य होते रहना चाहिए।

जीवन में आप जैसा करोगे वैसा भोगोगे : मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी

मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म.सा. ने आज की प्रवचन माला में कहा कि जीवन में यदि आप ऐसा कार्य कर रहे हैं जिससे पाप का बंध होता है तो उस पाप के परिणाम को भी आप ही भोगोगे। आप परिवार के लिए ना जाने किस पाप से पैसा ला रहे हो लेकिन आपके पाप कर्म को भोगना आप ही को पड़ेगा। आपकी पीड़ा को बांटने,आपके पाप को बांटने में आपके परिवार का कोई सहभागी नहीं बनेगा। जीवन में हम जो करते हैं उसे हमें ही भोगना पड़ता है। जीवन में जब पीड़ा आती है तो कोई हिस्सेदार नहीं होता लेकिन जीवन में जब पैसा और सुख और सुख के साधन आते हैं तो सभी हिस्सेदार बनते हैं। आपने अपने जीवन में बहुत कमाया,बहुत कमाया लेकिन उसका सदुपयोग करना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कि धन की तीन गति होती है। पहला दान,दूसरा भोग और तीसरा नाश, इनमें श्रेष्ठ उपयोग दान है। दान करने से पुण्य की प्राप्ति भी होती है और धर्म लाभ भी होता है। धन का भोग तो सभी करते हैं और जो दान भी नहीं करता और भोग भी नहीं करता तो उस धन का नाश भी हो जाता है। रुपए पड़े रहेंगे तो क्या उपयोग,तिजोरी में पड़े पड़े कीडे पड़ जाएंगे तो धन खराब हो जाएगा। आज रायपुर में 100 से अधिक भाग्यशाली पुण्यशाली लोग सिद्धि तप कर रहे हैं। भले ही आपने सिद्धि तप नहीं किया लेकिन जो कर रहे हैं उनके लिए आपके मन में भाव आना चाहिए कि उनका पारणा आप ही कराकर धर्मलाभ लेंगे।

व्यवस्थाओं का जायजा लेने कलेक्टर ने किया भाटापारा नगर के विभिन्न कार्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण

बलौदा बाजार दैनिक विश्व परिवार। कलेक्टर दीपक सोनी आज व्यवस्थाओं का जायजा लेने भाटापारा नगर के विभिन्न शासकीय कार्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने नगर पालिका परिषद कार्यालय,सिविल हॉस्पिटल,तहसील कार्यालय, एसडीएम कार्यालय सहित नगरीय निकाय में जारी जनसमस्या निवारण शिविर में पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया. इस दौरान श्री सोनी को भाटापारा नगर पालिका परिषद कार्यालय में भारी अव्यवस्था मिली जिस पर कलेक्टर ने गंभीर नाराजगी जताई. उन्होंने मौके में ही कामकाम में अनिमियता बरतने एवं गलत जानकारी देने के चलते 2 कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस किया जारी किया है। जिसमें सहायक राजस्व निरीक्षक अजय नायडू, भुवनेश्वर साहू, शामिल है। इसके साथ ही सीएमओ अजय बहादुर सहित 2 अन्य कर्मचारियों सुरेश साहू, स्थापना प्रभारी मनोरमा दीक्षित का निलंबन संबधी प्रस्ताव शासन को प्रेषित करने के निर्देश संबधित अधिकारियों को दिए है। इस दौरान उन्होंने कार्यालय में आएं आम नागरिकों से मिलकर उनकी समस्याओ के बारे में जानकारी हासिल की अधिकतर आवेदन

सफाई संबधी,राशन कार्ड एवं भवन अनुज्ञा संबधित थे। इस दौरान पार्षदों ने भी कलेक्टर से विभिन्न विषयों पर चर्चा कर शहर के समस्याओं के बारे में अवगत कराया। साथ ही कलेक्टर सोनी ने नगर के वार्ड क्रमांक 23 मुंशीस्माइल वार्ड में आयोजित जन समस्या निवारण शिविर का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने शिविर स्थल में लगाए गए विभिन्न विभागों के स्टॉलों का निरीक्षण कर विभागवार प्राप्त कुल आवेदन एवं उसके निराकरण हेतु की जा रही कार्रवाई के संबंध में जानकारी ली। इसके बाद कलेक्टर दीपक सोनी सुबह ओपीडी के समय ही सिविल हॉस्पिटल में पहुँचकर व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए पूरे हॉस्पिटल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने भर्ती हुए मरीजों एवं चेकअप कराने आये मरी?ो से बातचीत कर उनका हाल चाल जाना। भर्ती हुए मरीज ग्राम राजाढार निवासी 30 वर्षीय प्रशांत से कलेक्टर ने पूछा कि कब से भर्ती हो एवं खाना मिलता है कि नही जिस पर उसने जवाब देते हुए बताया कि मैं कल रात डायरिया की शिकायत के चलते भर्ती हुआ हु मुझे यहां पूरा खाना और दवाई सही समय में मिल रहा है। इसी तरह कलेक्टर ने मरीजों के परिजनों से पूछा की यहां की व्यवस्था ठीक है? डॉक्टर आते है चेकअप करनें की नहीं। जिस पर श्रीमती वर्मा ने बताया कि समय समय मे डॉक्टर भी नियमित रूप से निरीक्षण करनें आते है एवं हम लोगों को हॉस्पिटल में नियमित रूप से भोजन मिलता है। निरीक्षण के दौरान उल्टी दस्त के मरीज भी मिले जिस पर कलेक्टर ने सभी डॉक्टरों को सतर्क रहने के निर्देश दिए है। कलेक्टर श्री सोनी ने इस दौरान ओपीडी,मेडिकल स्टोर,विभिन्न वार्ड,नेत्र वार्ड, हमर लैब सहित अन्य कक्षो का भी मुयाना किया। इसके साथ ही उन्होंने निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश सीजीएमएसई के अधिकारियों को दिए है।

इसी तरह श्री सोनी ने तहसील एवं एसडीएम कार्यालय का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पुराने आलमारियों से फाइल को खंगाल खंगाल कर अवलोकन किया। उन्होंने 2 -3 फाइलों में आपत्ति भी दर्ज कराया। इस दौरान स्ट्रांग रूम,नाजिर शाखा, डब्ल्यू बीएमशाखा सहित अन्य कक्षो का अवलोकन किया। मौके में उपस्थित भाटापारा नगर एवं आसपास से आये हुए ग्रामीणों ने कलेक्टर से मुलाकात कर अपने आवेदन प्रस्तुत किए। कलेक्टर श्री सोनी ने भी उनके आवेदनों को संज्ञान में लेते हुए कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। कलेक्टर श्री सोनी ने शहर की सफाई के मॉनिटरिंग के लिए नायब तहसीलदारों को रूटीन में ड्यूटी लगाने के निर्देश एसडीएम को दिए है।

बारिश में गरीब का घर ढहा

गोबरा नवापारा। नवापारा में लगातार हो रही तेज बारिश के कारण एक गरीब का मिट्टी से बना घर ढह गया। प्रशासन ने बचाव कार्य किया।आपको बता दें कि नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 14 लटर्रापारा निवासी मनोज निषाद और उसका परिवार जो कि मिट्टी के घर में रह रहे थे ।आज देर शाम भारी बारिश होने के कारण उनका मिट्टी वाला घर ढह गया जिससे परिवार के लोग घर के अंदर ही घंटो फंसे रहे द्य इस बीच प्रशासन के अधिकारियों आलोक वर्मा तहसीलदार और मुख्य नगर पालिका अधिकारी प्रदीप मिश्रा को अवगत कराने के बाद प्रशासन की टीम ने तत्काल घटना स्थल पर पहुच कर रेस्क्यू किया और अंदर फंसे परिवार वालों को कुछ ही समय में सुरक्षित बाहर निकाला । मनोज निषाद और उसके परिवार के 4 लोग अपने परिचित के घर रुके हुए हैं वही इस संबंध में आलोक वर्मा तहसीलदार ने बताया की जानकारी मिलते ही विषय की गंभीरता को समझते हुए तत्काल टीम पहुंच कर 45 मिनट में फंसे लोगों को बाहर निकाला गया साथ ही पंचनामा रिपोर्ट बनाकर मुआवजे के लिए अभनपुर एसडीएम को प्रेषित कर दिया गया है ढ्ढ

इस बीच प्रशासन की ओर से नगर पालिका, राजस्व, और पुलिस विभाग की टीम ने परिवार वालों को निकालने में विशेष सहयोग किया ।

Khadi India

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises
Government of India

प्रत्रांक: राकाछग/ग्रामो सम./ग्रा.वि.यो./आ.आम./2024-25 दिनांक 02.08.2024

-: आवेदन आमंत्रण सूचना :-

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, रायपुर द्वारा ग्रामोद्योग विकास योजना के अंतर्गत वर्ष 2024-25 के लिए **हनी मिशन, फुटवेयर मरम्मत टूल्स किट, इलेक्ट्रिशियन, प्लम्बर, सिलाई मशीन, टर्न वूड क्राफ्ट, ईमली प्रसंस्करण, विद्युत कुम्हारी चाक तथा सेमी ऑटोमेटिक पेपर प्लेट एवं दोना निर्माण** के लिए छत्तीसगढ़ प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के पात्र आवेदको से निम्नलिखित लक्ष्य के अनुसार प्रशिक्षण सह टूल्स किट्स वितरण के माध्यम से स्वरोजगार संवर्धन हेतु आवेदन आमंत्रित किया जा रहा है, जिसका विवरण निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	ग्रामोद्योग का नाम		अभ्यार्थियों की संख्या	श्रेणी	प्रशिक्षण सह टूल्स किट्स वितरण हेतु प्रति व्यक्ति वितरण किये जाने वाली सामग्री का नाम व संख्या/मात्रा
1	एफबीआई	हनी मिशन (एपिस सेरेना)	40	ST	प्रति व्यक्ति 10 बी-बॉक्स, टूल्स किट्स
2	एबीएफपीआई	ईमली प्रसंस्करण	100	SC - 19 ST - 09 Other - 72	प्रति व्यक्ति औजार एवं उपकरण 01 सेट
3	रेन्टी	टर्न वूड क्राफ्ट	40	SC - 07 ST - 04 Other -29	प्रति व्यक्ति 01 नग मशीन/टूल्स
4	सेवा उद्योग	इलेक्ट्रिशियन	20	SC - 03 ST - 01 Other - 16	प्रति व्यक्ति 01 सेट औजार एवं उपकरण
		प्लम्बर	20	SC - 03 ST - 01 Other - 16	प्रति व्यक्ति 01 सेट औजार एवं उपकरण
		सिलाई मशीन (फण्ड उपलब्ध होने के पश्चात)	20	SC - 03 ST - 01 Other - 16	प्रति व्यक्ति 01 मशीन
5	पीसीबीआई	फुटवेयर मरम्मत टूल	50	SC/ST/Other	प्रति व्यक्ति 01 बॉक्स
6	एमबीआई	विद्युत कुम्हारी चाक (60 चाक का फण्ड उपलब्ध होने के पश्चात)	260	OBC/Other	प्रति व्यक्ति 01 नग विद्युत चलित कुम्हारी चाक
7	एचएमपीएफआई	सेमी ऑटोमेटिक पेपर प्लेट एवं दोना निर्माण मशीन	40	SC - 07 ST - 04 Other -29	05 व्यक्ति 01 नग मशीन/टूल्स

लाभार्थियो का चयन खादी और ग्रामोद्योग आयोग, रायपुर कार्यालय द्वारा गठित राज्य स्तरीय समिति द्वारा निम्नलिखित शर्तो एवं पात्रता पूर्ण करने के पश्चात किया जावेगा। प्रशिक्षण उपरांत प्रशिक्षणर्थियों को निम्न शर्तो के अनुसार उपरोक्त सहायता प्रदान करने का प्रावधान है।

क्र.	विवरण	एस.सी./एस.टी./ महिला/विकलांग	सामान्य/अन्य	बी.पी.एल. श्रेणी
1	स्वंय का अंशदान (कुल मशीनरी लागत)	10 प्रतिशत	20 प्रतिशत	0 प्रतिशत
2	प्रशिक्षण शुल्क	निःशुल्क	निःशुल्क	निःशुल्क
3	हनी मिशन के मामले में प्रशिक्षण शुल्क (पुरूष)	निःशुल्क	रू. 500.00	रू. 500.00

पात्रता :- आवेदन के समय आवेदनकर्ता की आयु 18 वर्ष से कम तथा 55 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए, एक परिवार से एक सदस्य ही योजना का लाभ ले सकते है उपरोक्त वर्णित किसी भी ग्रामोद्योग अंतर्गत आवेदन हेतु पूर्व में किसी भी राज्य/केन्द्रीय कार्यालय से औजार एवं उपकरण प्राप्त किया गया हो वह व्यक्ति आवेदन के पात्र नहीं होंगे। आवेदन के समय आवेदक द्वारा पूर्ण जानकारी एवं दस्तावेंजो की स्वप्रमाणित प्रति देना अनिवार्य है। अधिक जानकारी एवं आवेदन के प्रारूप हेतु राज्य कार्यालय, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, रायपुर के दूरभाष क्रमांक 0771-2886428 पर सम्पर्क कर सकते है।

इस कार्यक्रम में व्यक्तिगत आवेदक के अलावा राज्य के मान्यता प्राप्त स्व-सहायता समूह (नाबार्ड, एन.आर एल.एम. तथा आत्मा) अपना आवेदन राज्य कार्यालय, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, प्रथम तल, गांधी भवन, कंकाली पारा, रायपुर (soraipur.kvic@gov.in) में भेज सकते है। व्यक्तिगत/डाक द्वारा आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि 28.08.2024 तक कार्यालयीन समय तक भेज सकते है।

राज्य निदेशक

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्य मंत्रालय, भारत सरकार
राज्य कार्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
प्रथम तल गांधी भवन, केयूर भूषण स्मृति परिसर, कंकाली पारा,रायपुर - 492 001
Ist floor,Gandhi Bhavan, keyur Bhushan Smiriti Campus, Kankali para, Raipur- 492001
दूरभाष /Tele : 0771-2886428, ई मेल/ E-mail:- soraipur.kvic@gov.in
GSTIN No. 22AAAAK8320N1ZO, GSTIN No. 22JBP02531E1DG (TDS Under GST)

जिले के 42 महिला स्वसहायता समूहों को 50 लाख रूपये स्वीकृत

बलौदाबाजार विश्व परिवार। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देश पर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा महिलाओं को सशक्तिकरण बनाने के लिए राज्य शासन द्वारा संचालित छत्तीसगढ़ महिला कोष ऋण योजनांतर्गत जिले के विभिन्न परियोजनाओं से प्राप्त 42 महिला स्वसहायता समूहों के आवेदनों पर परीक्षण उपरान्त 50 लाख रूपये राशि स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वसहायता समूह द्वारा विभिन्न कार्यो को पूर्व से संचालित है, समूह को आत्मनिर्भर एवं उनके व्यवसाय को गति देने विस्तार करने के उद्देश्य से राशि ऋण स्वीकृत की गई है। राज्य शासन द्वारा इन समूहों को 3 प्रतिशत साधारण ब्याज पर ऋण दी जायेगी तथा इसे 24 से 36 मासिक किश्तों में वापस किया जायेगा। उक्त लाभान्वित स्व-सहायता समूहो में सिमगा परियोजना अंतर्गत मां बम्लेश्वरी स्वसहायता समूह कोलिहा-1 लाख रूपये, गृहलक्ष्मी स्वसहायता समूह कोलिहा-1 लाख रूपये, जय अम्बे स्वसहायता समूह कोलिहा-1 लाख रूपये, अंजोर महिला स्वसहायता समूह कोलिहा-1 लाख रूपये, ज्योति स्वसहायता समूह कोलिहा-1 लाख रूपये, वैभव लक्ष्मी स्वसहायता समूह कुथरौद-1 लाख रूपये, एकता स्वसहायता समूह कुथरौद-1 लाख रूपये, एकता स्वसहायता समूह बु?गहन-50 हजार रूपये, महालक्ष्मी स्वसहायता समूह सिमगा-3 लाख रूपये, भोजली स्वसहायता समूह तेंदुभाठा-1 लाख रूपये, जय मां शारदा स्वसहायता समूह हथबंद-1 लाख रूपये, शक्ति स्वसहायता समूह हथबंद-1 लाख रूपये, जय सतनाम स्वसहायता समूह सिनोधा-1 लाख रूपये,अमृत महिला स्वसहायता समूह नेवधा-1 लाख रूपये, देविका स्वसहायता समूह चक्रवाय- 1 लाख रूपये एवं वंदना स्वसहायता समूह लोहारी-1 लाख रूपये, लवन परियोजना अंतर्गत सरस्वती स्वसहायता समूह धनगांव-1 लाख रूपये, मुस्कान स्वसहायता समूह लवन-2 लाख रूपये,राधे-राधे स्वसहायता समूह लवन-2 लाख रूपये,पूनम स्वसहायता समूह लवन-2 लाख रूपये,वैष्णोदेवी स्वसहायता समूह सु?ेला-2 लाख रूपये,जय मां काली स्वसहायता समूह सुनसुनिया-50 हजार रूपये,नवदुर्गा स्वसहायता समूह लवन-1 लाख रूपये, वसुन्धरा स्वसहायता समूह लवन-1 लाख 50 हजार रूपये, गंगा जुमना स्वसहायता समूह मरदा-1 लाख 50 हजार रूपये,जय सतनाम स्वसहायता समूह चिरपोटा-50 हजार रूपये, वंदना स्वसहायता समूह खटियापाटी-1 लाख रूपये,मॉ दुर्गा स्वसहायता समूह तिल्दा-1 लाख रूपये,जय अम्बे स्वसहायता समूह कैलाशग?-3 लाख रूपये,अमरौतीन माता स्वसहायता समूह कोहरौद-1 लाख रूपये, उजाला स्वसहायता समूह मरदा-2 लाख रूपये, भाटापारा परियोजना अंतर्गत राज राजेश्वरी महिला समूह बिटकुली-1 लाख रूपये,मिनी माता स्वसहायता समूह महासती वार्ड-1 लाख रूपये, गरिमा स्वसहायता समूह मातादेवालय वार्ड-1 लाख रूपये,जय दुर्गा स्वसहायता समूह हसदा-1 लाख रूपये एवं आशा समूह निपनिया-1 लाख रूपये, कसडोल परियोजना अंतर्गत आदर्श महिला स्वसहायता समूह म?क?ा-50 हजार रूपये, गुरू घासीदास महिला स्वसहायता समूह बैजनाथ-1 लाख रूपये,उज्जवल महिला स्वसहायता समूह बिलारी-50 हजार रूपये एवं शारदा महिला स्वसहायता समूह बिलारी-1 लाख रूपये, पलारी परियोजना अंतर्गत गायत्री माता स्वसहायता समूह पलारी-1 लाख 50 हजार रूपये एवं शांति नगर पशुधन विकास स्वसहायता समूह पलारी-1 लाख रूपये राशि स्वीकृत की गई है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./13480/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 01-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13480
वार्ड का नाम-34- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **34** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR333A00028** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. I.D. SOLOMON** पिता/पति श्री/श्रीमती **WILLIAM SOLOMON** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **WILLIAM SOLOMON** पिता/पति श्री/श्रीमती **SW. SOLOMON DEVID** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **वसीयतनामा अंतिम इच्छा पत्र शपथ पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./13467/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 01-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13467
वार्ड का नाम-34- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **34** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR333A00177** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MD. HANIF** पिता/पति श्री/श्रीमती **MD ISMIL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MOHAMMAD AARIF SHEIKH** पिता/पति श्री/श्रीमती **SW. MOHAMMAD HANIF** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./13215/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 01-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13215
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **10** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227F0030A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RIYAZUDDIN** पिता/पति श्री/श्रीमती **RAMZANUDDIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. MUBARAK BEGUM 2. IMTIYAZUDDIN KHAN 3. AMINA BEGUM** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता श्री 1. RIYAZUDDIN 2. RIYAZUDDIN 3. MOHAMMAD NOOR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./13279/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 01-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13279
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **10** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227I0245A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BOHARRAM SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **DHARAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MINOR VIHAN SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **DINESH SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दान पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./13280/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 01-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13280
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **10** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227I0245B** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BOHARRAM SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **DHARAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. DEEPAK KUMAR SAHU 2. GHANSHYAM KUMAR SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **PARMESHWAR SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दान पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./12512/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 02-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12512
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332B00109** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. MALA NILE** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE A.R. NILE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MOHAN NILE** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता श्री LATE A.R. NILE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./13214/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 01-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13214
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **10** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227I00177** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **TRIMULA SPONGE IRON PVT. LTD, SANJAY PORWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **RAMESHCHAND PORWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MAMTA AGRAWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **MADAN MOHAN AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./13619/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 06-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13619
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **27** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737C00069** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **JAYA FATNANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O HITESH FATNANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती चंद्रकला प्रजापति** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति - श्री कुंदन प्रजापति** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 08 अगस्त 2024

नवीन शिक्षा नीति; युवाओं की आशाओं और आकांक्षाओं को साकार करने का साधन: उद्योग मंत्री देवांगन

शासकीय ई वि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के दीक्षारंभ समारोह में शामिल हुए मंत्री

कोरबा(विश्व परिवार)। सोमवार को शासकीय ई वि स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा के दीक्षारंभ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के वाणिज्य, उद्योग और श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन शामिल हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्री देवांगन ने वाणी की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती के चरणों में दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मंत्री देवांगन ने कहा की सभी शासकीय, निजी कॉलेजों में नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नए परिवेश में सहज महसूस कराने, उनमें संस्थान की विशिष्ट प्रकृति तथा संस्कृति को सिखाने, अन्य छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ संबंध बनाने तथा उन्हें व्यापक उद्देश्य तथा स्वयं की खोज की भावना से परिचित कराने के उद्देश्य से दीक्षारंभ समारोह का आयोजन किया जा रहा है। मंत्री देवांगन ने कहा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम में अलग-अलग विषयों से अवगत होंगे निश्चित रूप से भविष्य में हमारी शिक्षा नीति विश्व स्तर पर नई पहचान बनायेगी। उन्होंने छात्राओं को निरंतर आगे बढ़ते रहने एवं आदर्श छात्र जीवन जीने की बात कही।नवीन शिक्षा नीति युवाओं की आशाओं और आकांक्षाओं को साकार करने का साधन बनने जा रहा है। मंत्री देवांगन ने कहा की यह जिले का सबसे बड़ा महाविद्यालय है। आज नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं के लिए प्रवेश का प्रथम दिवस है। उन्होंने कहा की आप विद्यालय की पढ़ाई पूर्ण कर महाविद्यालय में प्रवेशित हो रहे हैं, जिस प्रकार एक पौधा रोपण होता है, उसके बाद वो पौधा बड़ा पेड़ बनता है और संपूर्ण प्रकृति को ठंडक प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार आज आपका भी पदार्पण हुआ है। महाविद्यालय में यहां से विद्यार्जन करके निकलेंगे तो राष्ट्र के लिए आप भी उपलब्धियां लेकर राष्ट्र का नाम रोशन करेंगे। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ साधना खरे, जनभागीदारी समिति की अध्यक्ष कविता सिंह राजपूत, वार्ड क्रमांक 16 के पार्षद नरेंद्र देवांगन, भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रफुल्ल तिवारी, डॉ रेणु बाला शर्मा, डॉ एस के गोभिल, डॉ अवंतिका कौशिल समेत अधिक संख्या में छात्र गण और अध्यापक गण उपस्थित रहे। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय और अग्रेसन कन्या महाविद्यालय में भी आयोजित दीक्षारंभ समारोह में मंत्री देवांगन शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा की आज से आप महाविद्यालय के छात्र हैं और ज्ञान के इस मंदिर का प्रयोग कर अपने भविष्य को चहुमुखी विकास की ओर ले जा पाएंगे। नवीन शिक्षा नीति का उपयोग कर नई शिक्षा को जीवन मे उतारते हुए सम्पन्न और विकसित भारत की संकल्पना में अपना योगदान दे पाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

प्रधानमंत्री आवास योजना ने सदाराम के जीवन में लाई खुशियों की नई रोशनी

महासमुंद(विश्व परिवार)। जिले के बागबाहरा विकासखंड के ग्राम पंचायत चरौदा के निवासी श्री सदाराम कमार ने पीएम जन मन के तहत प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से अपना खुद का पक्का मकान प्राप्त किया, जिससे उनके चेहरे पर खुशियों की मुस्कान लौट आई है। सदाराम एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखते हैं और अपने परिवार के साथ एक छोटे से कच्चे मकान में रहते थे। उनके लिए एक सुरक्षित और स्थिर आवास का सपना देखना मुश्किल था। जीवन की इस कठिनाई के बावजूद, उन्होंने कभी भी अपने सपनों को नहीं छोड़ा और सही अवसर का इंतजार करते रहे। उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना की जानकारी ग्राम पंचायत के सरपंच एवं सचिव द्वारा प्राप्त हुई। उन्होंने ग्राम पंचायत की सहायता से प्रधानमंत्री आवास योजना का फॉर्म भरा और कुछ ही दिन बाद उन्हें पीएम आवास के लिए स्वीकृति प्राप्त हो गई। इसके बाद, उन्होंने आवास का निर्माण कार्य शुरू करवाया और लगभग चार महीने में उनका आवास पूर्ण हो गया।

पिता की हत्या करने वाला पुत्र गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले की पाली थाना पुलिस ने पिता की हत्या कर फरार होने वाले आरोपी पुत्र को गिरफ्तार कर लिया है। पुत्र ने दो सौ रूपये देने से मना करने पर उपजे विवाद को लेकर अपने पिता की हत्या कर दी थी। मिली जानकारी के अनुसार 5 अगस्त को पाली थाना पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम नुनेरा चौक पारा में महेश राम ऊर्फ महेन्द्र अगरिया अपने पिता भवन सिंह को ईंट पत्थर से सिर में मारकर हत्या कर दिया है। सूचना पर पुलिस घटना स्थल पहुंची और घटना स्थल निरीक्षण कर धारा-194 बीएनएसएस कायम के तहत मामला दर्ज किया। निरीक्षण में मामला प्रथम दृष्टया धारा 103(1), 238 बीएनएस का पाये जाने से मौके पर ही धारा 103(1), 238 बीएनएस अपराध पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। मामले की गंभीरता को ध्यान में रखते हुये पुलिस अधीक्षक कोरबा द्वारा आरोपी को जल्द गिरफ्तार करने के निर्देश दिये। जिसपर पाली पुलिस ने टीम का गठन कर आरोपी की पतासाजी शुरू की। इसी दौरान 6 अगस्त मंगलवार को मुखबिर से सूचना मिली कि आरोपी महेश उर्फ महेन्द्र अगरिया, नुनेरा चौक पारा के आसपास घूम रहा है। जिसपर पुलिस की टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी कर आरोपी को हिरासत में लिया। पुछताछ में आरोपी ने बताया कि दिनांक 5 अगस्त के दोपहर 12 बजे उसके पिता भवन सिंह, जीजा बुधराम दोनो उसके बड़े पिताजी के खाली झोपड़ीनुमा मकान में बैठकर बातचीत कर रहे थे। तब यह वहां जाकर अपने पिता से 200 रूपये मांगा जिस पर भवन सिंह विवाद करने लगा। तब वह गुस्से में आकर पास में पड़े ईंट व पत्थर से पिता के सिर में मार दिया जिससे इसके पिता बेहोश होकर गिर गया और जिसके बाद उसने उसे पास के कुआं में डाल दिया।

केसीसी प्रकरण बनाने एवं स्वीकृति कार्य में लाए प्रगति कलेक्टर कार्तिकेया गोयल

रायगढ़,(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल ने आज कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में समय-सीमा की बैठक ली। इस दौरान उन्होंने विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए केसीसी निर्माण की प्रगति के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने मत्स्य एवं उद्यानिकी विभाग को केसीसी प्रकरणों के धीमी कार्य गति पर नाराजगी जताते हुए, विभागीय अमले से प्रकरण बनवाने एवं बैंक से आवश्यक फॉलोअप लेने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने अपेक्स बैंक द्वारा कम प्रकरण स्वीकृति पर एक सप्ताह के भीतर आवश्यक प्रगति लाने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने डेंगू नियंत्रण कार्यक्रम एवं ब्लड बैंक में स्थिति के संबंध में जानकारी लेने पर सीएमएचओ ने बताया कि लगातार सर्वे एवं सोर्स रिडक्शन का कार्य किया जा रहा है, इसके साथ ही टीम को पुलिस बल का सहयोग प्राप्त होने से कार्य आसान हो गया है। डेंगू लार्वा पाए जाने पर तत्काल टेमीफॉस का छिड़काव किया जा रहा है। इसके साथ उन्होंने बताया कि ब्लड बैंक में पर्याप्त मात्रा में ब्लड उपलब्ध है। कलेक्टर श्री गोयल ने बिना सूचना लंबे समय से अनुपस्थित कर्मचारियों के विरुद्ध प्राप्त विभागीय कार्यवाही के संबंध में निराकरण हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने विकास खंड में मौजूद यूथ सेंटर को युवाओं के प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी हेतु पुन: एक्टिवेट करने के निर्देश दिए, ताकि युवाओं को अधिक से अधिक लाभ मिल सके। कलेक्टर श्री गोयल ने ई-डिस्ट्रिक्ट में प्रदत सेवाओं के प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करते हुए लोक सेवा केंद्र एवं चॉइस सेंटर से प्राप्त आवेदनों की एंट्री करने करवाने तथा प्रति सप्ताह समीक्षा करने के निर्देश दिए है।

कोरबा में नशा मुक्त गांव अभियान; शराब पीकर हुड़दंग मचाने वालों पर कार्रवाई की मांग

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के रजगामार चौकी क्षेत्र के ग्राम बुंदेली के मझवार समाज के लोग एसपी कार्यालय बैनर पोस्टर लेकर पहुंचे। जिसमें लिखा हुआ था नशा मुक्ति अभियान, मझवार समाज ने ठाना है, नशे को जड़ से मिटाना है। ग्रामीणों ने एसपी के सामने अपनी समस्याएं रखी। गांव के पूर्व सरपंच शैलेश कुमार मंझवार ने बताया कि बुंदेली गांव में महुआ शराब की बिक्री जोरों पर चल रही है। अवैध रूप से महुआ की शराब बनाई जा रही है। जिसके चलते गांव का माहौल खराब हो रहा है। इसे लेकर मझवार समाज ने एक अभियान छेड़ा है, सामाजिक बैठक का निर्णय लिया गया है कि इस गांव में जो भी महुआ शराब बनाएगा उसे 11 हजार का जुर्माना देना होगा। साथ ही शराब पीकर घूमने और हुड़दंग मचाने वाले पर 11 सौ का जुर्माना लगाया जाएगा। इस निर्णय के बाद गांव में 50त्न लोगों ने शराब बनाना और पीकर घूमने बंद कर दिया है, लेकिन बाकी 50त्न लोग अब भी अमल नहीं कर रहे हैं। इसे लेकर मझवार समाज पुलिस अधीक्षक के पास पहुंचा और कार्रवाई की मांग की। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नेहा वर्मा ने ग्रामीणों को समझाया कि कानून को अपने हाथ में न लें, पुलिस आपके साथ है। यदि अवैध रूप से शराब बनाकर बेची जा रही है तो इसकी सूचना पुलिस को दें।

कैलाशपति धाम में विधि विधान से प्रतिदिन हो रहा है रुद्राभिषेक

रायगढ(विश्व परिवार)। रायगढ़ के पंडरीपानी स्थित कैलाशपति धाम में प्रतिवर्ष सावन माह में प्रतिदिन विधि विधान से रुद्राभिषेक संपन्न होता है। इस बार भी यहां पर रुद्राभिषेक और उसके बाद भोले बाबा का श्रृंगार देखने के लिए भक्तगण दूर-दूर से पहुंच रहे हैं। उल्लेखनीय है कि सावन में रुद्राभिषेक का अपना महत्व है भक्तगण अपनी विभिन्न समस्याओं और मन्नतों को अपने मन में लिए बाबा का पूजा अर्चना करते हैं और भोलेनाथ ही ऐसे भगवान हैं जो अपने भक्तों पर बहुत शीघ्र प्रसन्न हो कर पूर्ण आशीर्वाद बरसाते हैं। इस मंदिर की एक और खास बात यह है कि यह मंदिर वास्तु शास्त्र के अनुसार निर्मित है अतः यहां पर पूजा अर्चना करने वाले भक्तगण इस मंदिर से बहुत कुछ पाते हैं और एक बार जुड़ने के बाद वह अपनी श्रद्धा भक्ति और ईश्वर के प्रति अपने आस्था को समर्पित करते हुए यहां बार-बार आते हैं । सोमवार के दिन यहां जल चढ़ाने वालों का तांता लगा रहता है लोग अपनी श्रद्धा से जल दूध दही पुष्प मधुरस धतूरा एवं अन्य प्रकार के पूजन सामग्रियों को यहां समर्पित करते हैं । रुद्राभिषेक के बाद भोले बाबा का श्रृंगार और आरती यहां की अत्यंत विशिष्ट परंपरा है ऐसा कहा जाता है कि ऐसा श्रृंगार देश के बहुत ही कम मंदिरों में देखने को मिलता है। जब भक्तगण श्रद्धा से ओतप्रोत श्रृंगार होते हुए देखते हैं तो उनकी आत्मा अत्यंत ही शुभ, शांति और सुकून का अनुभव करती है। सावन में भोले के प्रत्येक भक्त को यहां अवश्य आना चाहिए।

न्यू लाईफ में विश्व स्तनपान सप्ताह पर प्रतियोगिता का आयोजन

बैकुंठपुर(विश्व परिवार)। न्यू लाइफ हेल्थ एण्ड एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित न्यू लाईफ इंस्टीट्यूट आफ नर्सिंग में छात्र-छात्राओं द्वारा विष्व स्तनपान सप्ताह पर इस वर्ष रंगोली प्रतियोगिता एवं स्वास्थ्य शिक्षा का आयोजन जिला अस्पताल बैकुंठपुर में किया गया। इस वर्ष विश्व स्तनपान सप्ताह का थिम ''क्लोजीगं द गेप: ब्रेस्टफीडींग सर्पोट फोर आल'' अर्थात् ''अन्तर को कम करना: सभी के लिए स्तनपान समर्थन''है। इसका तात्पर्य स्तनपान को सभी मां के लिए आसान बनाना है। प्रत्येक वर्ष विश्व स्तनपान सप्ताह 1 अगस्त से 7 अगस्त तक मनाया जाता है। इसका उद्देश्य महिलाओं को स्तनपान के कार्य को दृढ़तापूर्वक करने का समर्थन करता है। स्तनपान शिशु को हर रोग से लड़ने के लिए सक्षम करता है। यह एक कम वसा एवं उच्च प्रोटीन वाला दूध है जो नवजात शिशु की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। माँ का दूध शिशु की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी सहायक होता है। इस वर्ष स्तनपान सप्ताह पर संस्था में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बी0एस0सी0 नर्सिंग समस्त सेमेस्टर, एवं चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया गया। एवं जिला अस्पताल बैकुण्ठपुर में पंचम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं द्वारा स्तनपान कराने वाली नई माताओं को स्तनपान एवं उसके महत्व के बारे में जानकारी दी गई।

संकुल स्तरीय पालक शिक्षक मेगा बैठक में सम्मिलित होने शाउमावि बतरा पहुंचे कलेक्टर रोहित व्यास

सूरजपुर(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देश पर आज जिले के सभी संकुल केंद्रों में संकुल स्तरीय पालक शिक्षक मेगा का आयोजन किया गया है। पालक शिक्षक मेगा बैठक का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की संपूर्ण गतिविधियों से पालकों को अवगत कराना और बच्चों को प्रेरणा व उचित मार्गदर्शन प्रदान करना था। संकुल स्तरीय पालक शिक्षक मेगा बैठक में सम्मिलित होने के लिए जिले के कलेक्टर श्री रोहित व्यास आज शा.उ.मा.वि. बतरा पहुंचे थे। जहां उन्होंने आज के कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी, शिक्षक व पालकों को धन्यवाद ज्ञापित किया और उपस्थित जनों के समक्ष आज के कार्यक्रम के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अपना पक्ष रखा। उन्होंने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों के भविष्य को निखारने के लिए शिक्षक व पालक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि पालक शिक्षक बैठक के माध्यम से शिक्षक व पालक अपनी सहभागिता निर्धारित कर बच्चों के भविष्य को उज्जवल बनायें। उन्होंने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि सामान्यत: यह देखा गया है कि जो पालक अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि लेते हैं उनके बच्चों के परिणाम बेहतर प्राप्त होते है। प्रत्येक शिक्षक व पालक के लिए यह आवश्यक है कि वो बच्चों के बेहतर परिणाम के उनके साथ नियमित संपर्क स्थापित करें और बच्चों द्वारा की जा रही गतिविधियों को नियमित रूप से मॉनिटरिंग करें। उन्होंने आगे कहा कि विद्यार्थी शिक्षक व पालक का अनुसरण करते है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम उनके सामने शिक्षक व पालक बेहतर उदाहरण स्थापित करें। इसके साथ ही उन्होने पालक शिक्षक बैठक अंर्तगत अनिवार्य 12 महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर जिसमें मेरा कोना, छात्र दिनचर्या , बच्चे ने आज क्या सीखा, बच्चा बोलेगा बेझिझक, बच्चों की अकादमिक प्रगति एवं परीक्षा पर चर्चा, पुस्तक की उपलब्धता सुनिश्चित करना, बस्ता रहित शनिवार, विद्यार्थियों के आयु/कक्षा अनुरूप स्वास्थ्य परीक्षण एवं पोषण की जानकारी, जाति-आय निवास प्रमाण पत्र, न्योता भोज, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं/छात्रवृत्ति एवं विभागीय योजनाओं की जानकारी पर चर्चा, विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से शिक्षा हेतु पालकों एवं छात्रों को अवगत कराना इत्यादि शामिल है पर क्रमवार चर्चा की।

नीरज का होगा स्कूल फीस माफ, गुलाब बाई बरेठ का बना नया राशन कार्ड

जनचौपाल में कलेक्टर ने किया समस्याओं का नराकरण

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर जनचौपाल में अपने नाती नीरज का स्कूल से फीस माफकराने के लिए आवेदन देने वाली वृद्धा केरोबाई के प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर अजीत वसंत ने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि स्कूल प्रबंधन से चर्चा कर विद्यार्थी की फीस माफ कर उन्हें पढ़ाई के प्रति प्रोत्साहित किया जाए। उन्होंने नीरज को फीस की वजह से स्कूल से अनुपस्थित न होने और ध्यान लगाकर अच्छे से पढ़ाई करने कहा। जनचौपाल में नया राशन कार्ड बनाने का आवेदन लेकर पहुंची वार्ड क्रमांक 18 की गुलाब बाई बरेठ ने जब अपनी समस्याएं बताई तो कलेक्टर ने खाद्य अधिकारी को निराकरण के निर्देश दिए। कलेक्टर के निर्देश के पश्चात् गुलाब बाई का नया राशन कार्ड बनाकर प्रदान किया गया। इसी तरह जनचौपाल में किसान पुस्तिका बनवाने आवेदन देने वाले पाली के किसान हनुमान सिंह के आवेदन का निराकरण करने के निर्देश तहसीलदार को दिए गए। आज कलेक्टर जनचौपाल में कलेक्टर अजीत वसंत ने दूर दराज के इलाकों, पहाड़ी क्षेत्रों, वनांचलों से अपनी समस्याओं, शिकायत लेकर आने वाले लोगों की परेशानियों को गंभीरता से सुना और संबंधित अधिकारियों को निराकरण करने के निर्देश दिए। जनचौपाल में आर्थिक सहायता, नया राशन कार्ड बनाने, पेंशन, स्कूल फीस माफकरने, त्रुटि सुधार कराने, मुआवजा, अतिक्रमण हटाने सहित अन्य समस्याओं के संबंध में आवेदन प्राप्त हुए, जिसमें ग्राम राहाडीह पाली के किसान हनुमान सिंह ने किसान पुस्तिका, नोनबिर्रा के किसान दुकालु सिंह ने अपनी पुत्रियों का जाति प्रमाण पत्र बनाने ग्राम भरूहामुड़ा, चैतमा के किसान मुरीतराम ने त्रुटि सुधार, नक्शा काटने, ग्राम करतला के इंदलमति राठिया ने फेरलेन निर्माण के दौरान राखड़ खेत में बहने से हुए नुकसान का मुआवजा देने, बुधवारी बाजार बस्ती में खंभे से तार खिंचवाने, भिलाई बाजार से छेदुराम महिलांगे ने वृद्धा पेंशन दिलाने, ग्राम पड़निया के किसान बनवारी लाल ने मानदेय भुगतान, उरगा निवासी ग्रामीणों ने होटल रिलैक्स इन से निकलने वाले विषैले पानी पर रोकथाम और आवश्यक कार्यवाही के संबंध में आवेदन दिया। जनचौपाल में गेवरा बस्ती के गंगाराम ने डीएवी पब्लिक स्कूल कुसमुंडा में आरटीई के तहत प्रवेश में गड़बड़ी होने, बेलगिरी बस्ती के धनकुंवर ने बारिश से मकान गिरने पर मुआवजा, ग्राम पण्डरीपानी गोपालपुर के सरपंच ने साप्ताहिक बाजार लगाने के संबंध में कलेक्टर को आवेदन दिया। जनचौपाल में आज अलग-अलग समस्याओं के निराकरण हेतु कुल 52 आवेदन प्राप्त हुए। इस दौरान अपर कलेक्टर दिनेश नाग, सहायक आयुक्त आदिम जाति विकास विभाग कांत कसेर, जिला खाद्य अधिकारी घनश्याम सिंह कंवर, डीएमसी मनोज पाण्डेय, कृषि अधिकारी देवेन्द्र कंवर सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 08 अगस्त 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून बनाने में केंद्र की कोताही

योगेंद्र योगी

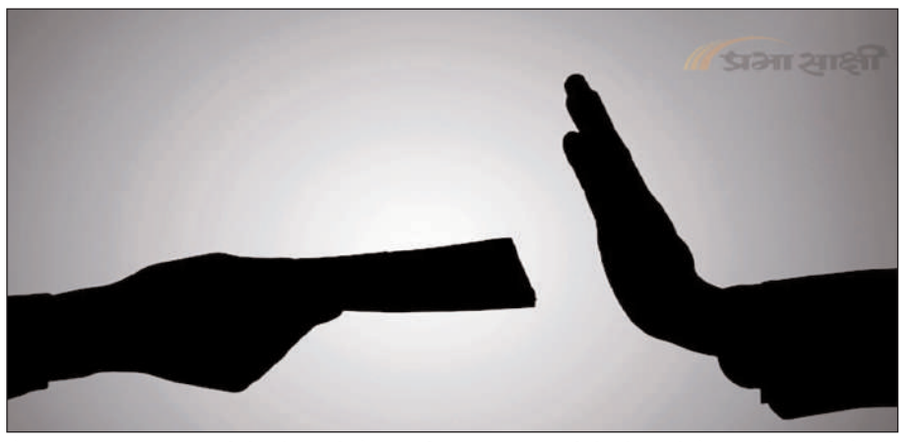

प्रधानमंत्री मोदी ने भ्रष्टाचार और काले धन पर और अधिक कार्रवाई करने का संकल्प लेते हुए कहा कि सरकार ने जांच एजेंसियों को भ्रष्ट लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के लिए पूरी आजादी दे दी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस कार्रवाई में किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। विपक्षी दलों के नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाने वाली केंद्र सरकार सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद जनप्रतिनिधियों के भ्रष्टाचार रोकने के लिए कानून बनाने में नाकाम रही है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई को लेकर याचिका पर सुनवाई स्वीकार करना स्वीकार कर लिया है। देश की शीर्ष अदालत ने वर्ष 2018 में एक जनहित रिट याचिका पर आदेश दिया था कि चुनाव लडने् वाले प्रत्याशियों के अलावा उनके परिवार के लोगों की सम्पत्ति और आय के स्त्रोतों की जानकारी देने के लिए केंद्र सरकार कायदे-कानून बनाए। करीब 6 साल बीतने के बावजूद केंद्र सरकार इस आदेश की पालना करने में विफल रही। इस पर केंद्र सरकार के खिलाफ अवमानना कार्रवाई को लेकर दायर याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया है। आश्चर्य की बात यह है कि लोकसभा और चार राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने विपक्षी दलों के नेताओं को भ्रष्टाचार को प्रमुख मुद्दा बनाया था। प्रधानमंत्री मोदी सहित अन्य वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने विपक्षी दलों पर भ्रष्टाचार को लेकर जमकर कटाक्ष किया था। प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्षी गुट को भ्रष्ट लोगों का जमावड़ा बताया था। प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर विपक्ष पर निशाना साधते हु कहा था कि विपक्षी नेता नोटों के बंडलों के साथ रंगे हाथों पकड़े जा रहे हैं। झारखंड और बंगाल में ऐसे मामले उजागर हो रहे हैं। वे दिल्ली की जनता को लूटने का कोई मौका नहीं छोड़ते। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते हुए पीएम ने कहा कि राजनीति में बदलाव के लिए आए लोगों ने दिल्ली की जनता को धोखा दिया है। पीएम ने कहा था कि शराब घोटाला हो या नेशनल हेराल्ड घोटाला, भ्रष्टाचारियों से एक-एक पैसा वसूला जाएगा। यह मोदी की गारंटी है। जिसने भी लूट की है, उसे जनता का पैसा वापस करना होगा। हम इस पर कानूनी राय लेंगे। उन्होंने कहा कि मोदी भ्रष्ट लोगों के धन का एक्स-रे करेंगे। जिन्होंने लूट की है, उन्हें जेल जाना होगा। इतना ही नहीं राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करना एनडीए सरकार का एक मिशन है, न कि चुनावी लाभ का मामला। प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार और काले धन पर और अधिक कार्रवाई करने का संकल्प लेते हुए कहा कि सरकार ने जांच एजेंसियों को भ्रष्ट लोगों के खिलाफकड़ी कार्रवाई करने के लिए पूरी आजादी दे दी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस कार्रवाई में किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने पहले आम आदमी पार्टी (आप) के खिलाफसबूतों के साथ गंभीर आरोप लगाने और बाद में लोकसभा चुनाव लडने् के लिए उसके साथ गठबंधन करने के लिए कांग्रेस पर निशाना साधा। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं बिना किसी झिझक के यह कहना चाहता हूं और देशवासियों को भी बताना चाहता हूं कि मैंने एजेंसियों को भ्रष्ट लोगों और भ्रष्टाचार के खिलाफसख्त कार्रवाई करने की पूरी आजादी दी है। सरकार कहीं भी हस्तक्षेप नहीं करेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें (जांच एजेंसियों को) ईमानदारी के लिए ईमानदारी से काम करना चाहिए। भ्रष्टाचार में लिप्त कोई भी व्यक्ति कानून से बच नहीं पाएगा। यह मोदी की गारंटी है। विपक्षी सदस्यों के इस आरोप का जिक्र करते हुए कि सरकार जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है, प्रधानमंत्री मोदी ने दिवंगत मुलायम सिंह यादव जैसे विपक्षी नेताओं के बयानों का हवाला दिया, जिन्होंने यूपीए सरकार पर उनके खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया था। उन्होंने यह भी कहा कि यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट ने भी सीबीआई को पिंजरे में बंद तोता करार दिया था। उन्होंने कहा कि केंद्रीय जांच एजेंसियों पर आरोप लगाए गए हैं। कहा गया है कि केंद्र सरकार जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आप शराब घोटाला करती है, आप भ्रष्टाचार करती है, आप बच्चों के लिए कक्षाएं बनाने में घोटाला करती है, आप पानी घोटाला भी करती है... कांग्रेस आप के खिलाफशिकायत करती है। कांग्रेस आप को अदालत में घसीटती है और अगर कार्रवाई होती है तो वे मोदी को गाली देते हैं। इन आरोपों के जवाब में कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के दलों का कहना था कि भाजपा जिन नेताओं पर करोड़ों के घोटाले का आरोप लगाती है, बाद में उन्हें ही अपनी पार्टी में शामिल करवा कर केस वापस ले लेती है। भाजपा के पास ऐसी वॉशिंग मशीन है, जिसमें 10 साल पुराना केस भी डालो तो आरोपी बेदाग होकर निकलता है। कांग्रेस ने विपक्ष के ऐसे 51 मामलो को गिनवाया जिन पर कार्रवाई चल रही है। इसके अलावा उन्होंने 20 केस ऐसे गिनाए, जिनमें भाजपा और उसकी सहयोगी दल के नेताओं पर केस दर्ज हैं। लेकिन वह अभी तक बचे हुए हैं और उन पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। कांग्रेस ने एनसीपी नेता प्रफुल्ल पटेल का नाम लेकर कहा था कि भाजपा ने प्रफुल्ल पटेल पर अरबों रुपए के घोटाले का आरोप लगाया था लेकिन जब वे एनसीपी छोड़ भाजपा में शामिल हुए तब उनके सारे दाग धुल गए और वे बहुत अच्छे इंसान हो गए। उन्होंने असम के मुख्यमंत्री हिमंता सरमा का भी नाम लिया और कहा कि इनकी कहानी भी सेम है। गौरतलब है कि असम के मुख्यमंत्री पर गुवाहाटी में जलापूर्ति घोटाले का आरोप लगा था। नारायण राणे के खिलाफईडी-सीबीआई ने कई मामले दर्ज किए। अजीत पवार घोटाले के आरोप में ईडी द्वारा जांच चल रही थी। कांग्रेस की तरफ से महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण पर भाजपा ने आदर्श हाउसिंग सोसाइटी घोटाले का आरोप लगाया था लेकिन भाजपा में शामिल होने के बाद इनके खिलाफ मामला आगे नहीं बढ़ा। इसके अलावा हसन मुश्रीफ और छगन भुजबल इन दोनों पर भाजपा ने मनी लॉन्ड्रिंग का आरोप लगाया था। जिसके बाद श्वष्ठ ने इन पर कार्रवाई भी की थी. लेकिन इनके एनसीपी से अलग हो जाने के बाद इनके खिलाफ सारी कार्रवाइयां बंद हो गईं। गौरतलब है कि भारत भ्रष्टाचार के मामले में विश्व में बदनाम है। भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक 2023 में 180 देशों में से भारत 93वें स्थान पर रहा। जबकि वर्ष 2022 में भारत की रैंक 85 थी। यह सूचकांक विशेषज्ञों और व्यवसायियों के अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार के कथित स्तर के आधार पर 180 देशों और क्षेत्रों को रैंक करता है। भारत में हर तरफ भ्रष्टाचार का खुलासा एक अंतरराष्ट्रीय सर्वे में भी हो चुका है। सर्वे में शामिल कुल कंपनियों में से 80 फीसदी ने कहा है कि 2015-16 में वह भ्रष्टाचार से जुड़े धोखाधड़ी का शिकार हुई हैं। 2013-14 में ऐसी कंपनियों की संख्या 69 फीसदी थी। सवाल यही है कि देश में जब हर तरफ भ्रष्टाचार व्याप्त हो तब केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के जनप्रतिनिधियों सम्पत्ति और आय स्त्रोतों आदेश पर कानून बनाने में कोताही क्यों बरती है। केंद्र सरकार का यह रवैया भ्रष्टाचार के खिलाफ वादे-दावों के अंतर को बताता है। यदि ऐसा नहीं होता तो करीब 6 साल पहले दिए गए फैसले की पालना केंद्र सरकार कर चुकी होती।

युवाओं को बेहतर भविष्य संजोने का मौका दिया....

कारगिल विजय दिवस पर छह राज्यों की भाजपा सरकार ने अग्निवीरों को तोहफा दिया है। गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओडिशा, उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्रियों द्वारा यह जानकारी दी गई है। अग्निवीर जब सेना की अपनी सेवा के बाद वापस लौटेंगे तो उन्हें पुलिस और पीएसी में प्राथमिकतानुसार समायोजित किया जाएगा। अग्निवीर योजना केंद्र सरकार की ड्रीम योजनाओं में से है, यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2022 में शुरू की गई थी। इसके तहत 17 से 21 साल की आयु वाले युवाओं को भारतीय सेना में चार साल के लिए सेवा का अवसर दिया जा रहा है। आर्मी, नेवी और एयर फोर्स में सैनिक स्तर पर भर्ती के लिए अग्निवीर योजना को लागू किया गया है। आम चुनाव के दौरान विपक्ष ने इस योजना को विशेष तौर से निशाने पर रखा था और इसे लगातार रद्द करने की मांग कर रहा है। लोक सभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सत्ता में आने के बाद इसे बंद करने की बात करते हैं। हालांकि सरकार बार-बार इस योजना को लेकर दलील देती रही है कि कुछ राजनीतिक दल इस तरह की बातों से युवाओं को गुमराह कर रहे हैं। अग्निवीरों के लिए आरक्षण की इस घोषणा के पीछे यही दबाव माना जा रहा है। चूंकि ये अल्पकालिक सेवाएं हैं, इसलिए कहा जा रहा है कि चार साल बाद ये सेवामुक्त अग्निवीर पुनः बेरोजगार हो जाएंगे। इसलिए सरकार ने इन्हें निश्चित आरक्षण देकर इस विवाद को संभालने का प्रयास किया है। हालांकि कुछ समय पूर्व ही गृह मंत्रालय द्वारा पूर्व अग्निवीरों के लिए केंद्रीय अर्धसैनिक बलों में दस फीसद पद आरक्षित करने का भी ऐलान किया गया है। साथ ही, अग्निवीरों में से पच्चीस प्रतिशत को पंद्रह सालों तक सेवा में बनाए रखने का प्रावधान भी जोड़ा गया। देश में बढ़ती जा रही बेरोजगारी सरकार के लिए कड़ी चुनौती बनती जा रही है। दूसरे, बहुत बड़ा वर्ग सेना में नियुक्ति को लेकर विशेष उत्सुक रहता है। उसे प्राप्त होने वाला यह मौका सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। सेना में केवल चार वर्षो के सेवाकाल के उपरांत इन प्रशिक्षित युवाओं का इससे बेहतर इस्तेमाल नहीं हो सकता। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि ये योजनाएं युवाओं को बेहतर भविष्य संजोने का मौका देने वाली साबित हो सकती हैं बशत्रे अग्निवीर को चार साल के कार्यकाल के बाद अवसरों के दरवाजे बंद न हों।

विशेष लेख

भारतीय ज्ञान परंपरा-भारतीय शिक्षा प्रणाली-नई शिक्षा नीति

प्रवीण गुगनानी

मैकॉले की शिक्षा पद्धति ने हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा को समाप्त करने के संपूर्ण प्रयास किए थे। अंग्रेजों ने ये सब इसलिए किया क्योंकि वे जानते थे कि इस ज्ञान परंपरा के प्रवाह चलते रहने से वे हमें अपना गुलाम नहीं बना पायेंगे। इसे युगांतरकारी कदम कहा जाना चाहिये या अपनी भूमि, अपनी मिट्टी से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण व महत्वाकांक्षी प्रयास। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को जिस प्रकार से भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन-अध्यापन, लेखन-पठन पर विशेष रूप से केंद्रित किया गया है वह अपने आप में स्वयं को पहचानने का एक प्रयास है। हम पिछले दशकों में अंग्रेजों की दी हुई शिक्षा पद्धति में हम स्वयं को ही भूल चुके थे। यूजीसी द्वारा नई युवा, छात्र पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने के अनेक सार्थक व सकारात्मक प्रयास किए जा रहें हैं। विगत दो सौ वर्षों में भारत में चल रही शिक्षा पद्धति ने हमसे हमारा राष्ट्रीय गौरव भाव छीनकर हमें आत्म ग्लानि, व हीनता के भाव से भर दिया था। अब विषय चाहे कोई भी हो, सभी में भारतीयता से जुड़े हुए विषयों का समावेशन आत्म गौरव के भाव को बढ़ाता है। मैकॉले की शिक्षा पद्धति से हमारी विमति-असहमति दशकों पूर्व से चल रही थी। असहमति के स्वर थे किंतु इस असहमति का निराकरण नहीं हो पा रहा था। गणित, चिकित्सा विज्ञान, योग विद्या, शस्त्र निर्माण, रसायन विज्ञान, वैमानिकी, कृषि विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत, वास्तुकला, मूर्तिकला, धातु विज्ञान, वस्त्र निर्माण, न्याय, दर्शन, खगोल विज्ञान, ज्योतिष आदि आदि कई विषयों में हमारी समृद्ध, बलशाली व गौरवशाली विरासत हमें मिली है। हमें हमारी विरासत से सतत वंचित किया गया था। शिक्षाविद् सतत इस बात को कह रहे थे कि वर्तमान शिक्षा पद्धति हमें दीन-हीन स्थिति में ले जा रही है, किंतु उनके स्वर अनसुने ही रह रहे थे। मैकॉले की शिक्षा पद्धति ने हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा को समाप्त करने के संपूर्ण प्रयास किए थे। अंग्रेजों ने ये सब इसलिए किया क्योंकि वे जानते थे कि इस ज्ञान परंपरा के प्रवाह चलते रहने से वे हमें अपना गुलाम नहीं बना पायेंगे। स्वयं के हीनता बोध को समाप्त करने हेतु भी अंग्रेजों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को नष्ट किया। स्वातंत्र्योत्तर भारत में जो कार्य सर्वप्रथम होना चाहिये थे वह अब हो रहा है। हमारी स्व आधारित शिक्षा पद्धति हमें अब मिल रही है। शिक्षा क्या है, शिक्षण क्या है और शिक्षकत्व क्या है? विशुद्ध भारतीयता अर्थात् सनातन स्वमेव ही शिक्षण को व्यक्त करता है। शिक्षण में शिक्षा और शिक्षकत्व के सभी तत्त्व समाहित हो ही जाते हैं। तनिक विस्तार से और तथ्यपूर्वक समझने हेतु यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के 33 वें मंत्र को समझते हैं ईश्वर आज्ञा देता है कि विद्वान पुरुष और स्त्रियों को चाहिए कि विद्यार्थी कुमार व कुमारी को विद्या देने के लिए गर्भ की भाँति धारण करें जैसे क्रम क्रम से गर्भ के मध्य देह बढ़ती है वैसे अध्यापक लोगों को चाहिए कि अच्छी अच्छी शिक्षा से ब्रह्मचारी कुमार व कुमारी को श्रेष्ठ विद्या में वृद्धि करें तथा उनका पालन करें वह विद्या के योग से धर्मात्मा और पुरुषार्थ युक्त होकर सदासुखी हो। ऐसा अनुष्ठान सदैव करना चाहिए। वैदिक वाङ्मय में शिक्षक अर्थात् आचार्य शब्द के संदर्भ में व्याख्या है- आचार्य वह जो आचरण की शिक्षा दे, सदाचार दे, दुराचार से दूर रखे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने शिक्षा शब्द को भी परिभाषित करते हुए कहा है - शिक्षा वह जिससे मनुष्य की आत्मा, धर्मात्मा बने, व्यक्ति जितेन्द्रिय हो। हमारी वैदिक धरोहर यजुर्वेद के छठे अध्याय के 14 वें मंत्र मे वैदिक शिक्षा पद्धति को क्रमानुसार पाठ्यक्रम रूप में रचा गया ह इस मंत्र में आचार्य अपने शिष्य से कहते हैं, मैं नाना प्रकार की शिक्षाओं से तेरी वाणी को शुद्ध करता हूं, तेरे नेत्र को शुद्ध करता हूं, तेरी समस्त इंद्रियों को शुद्ध करता हूं और इस प्रकार मैं तेरे चरित्र को शुद्ध करता हूं तेरे। वस्तुत: शिष्य का जितेन्द्रिय हो जाना ही शिक्षा को आत्मसात् कर लेना ही शिक्षा में भारतीयता है। ऐंद्रिय दृष्टि से जितेन्द्रिय हो जाने को अर्थात् विवेकशील हो जाने व शुचितापूर्ण हो जाने को ही सनातन ने प्रमाणपत्र माना है। भारतीयता सनातन की धुरी पर ही घूमती है। यहाँ प्रश्न यह उपजता है कि, भारतीयता क्या है?! या जब शिक्षा का भारतीयकरण ही हमारी शैक्षिक व्यवस्था की मूल आवश्यकता है तो ये शिक्षा का भारतीयकरण है क्या?! जीवन के विविध, विभिन्न क्षेत्रों में भारतीयता की स्थापना या उनमें देशज तत्व को स्थापित कर देना ही भारतीयता है। इस कार्य में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका के तत्त्व का बना रहना ही शिक्षा का भारतीयकरण है। भारतीयता के अनिवार्य व मूल तत्त्व हैं - भूमि, जन, संप्रभुता, भाषा एवं संस्कृति। हमने यहाँ इन पाँच शब्दों के पूर्व भारतीय शब्द का उपयोग नहीं किया है किंतु जीवन के इन तत्वों में भारतीयता का समावेशीकरण और भारतीयता से ही इन शब्दों के सत्व को साधना यही भारतीयकरण है। हमारी शिक्षा व्यवस्था और भारतीयता विषय की मूल अवधारणा को अति संक्षेप या सूक्ष्म रूप में इस प्रकार ही समझा जा सकता है। विस्तार करें तो, अंत:करण की शुचिता, बाह्य शुचिता, सात्विकता का सातत्य बनाये रखना और इनसे आनन्दमय रहना है। देशज भारतीय जीवन मूल्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना और उनकी सतत रक्षा ही सच्ची भारतीयता की कसौटी है। संयम, अनाक्रमण, सहिष्णुता, त्याग, औदार्य, रचनात्मकता, सह-अस्तित्व, बन्धुत्व, सर्व समावेशी, सर्व स्पर्शी, समरसता, आदि आदि प्रमुख भारतीय जीवन मूल्य हैं जो शिक्षा में समाहित हों यह आवश्यक हैं। स्वदेशी का आग्रह रखते हुए हम वैश्वीकरण के न केवल अग्रदूत बनें अपितु वैश्वीकरण करण को अपने स्वभाव में स्थापित किए रहें यह भी भारतीयता या सनातनता है। वस्तुत: भारतीय शिक्षा पद्धति या वैदिक शिक्षण ही हमें वह वैचारिक आधार देता है जिस आधार पर स्थिर होकर हम देशज के आग्रह के साथ वैश्विक होते भी हैं और विश्व को भारतीयता में ढलने का संदेश भी देते हैं। इस उपक्रम के फलस्वरूप वैदिक धर्म में विश्व का कितना ध्यान आकृष्ट हुआ है यह किसी से छिपा नहीं है। पर अत्यधिक बल देता है। हमारी शिक्षा में विश्वबंधुत्व का भाव समूचे विश्व में हमारी भारतीयता का द्योतक बन हमारा वैचारिक नेतृत्व करता है। विश्वबंधुत्व का यह अविरल, अविचल अद्भुत और उद्भट भाव हमें हमारी आध्यात्मिकता मात्र से मिलता है।

विशेष लेख

बजट में बिहार के विकास को लेकर कई बड़ी घोषणाएं की

सुशील देव

केंद्र सरकार के नये बजट में बिहार के विकास को लेकर कई बड़ी घोषणाएं की गई हैं। घोषणाएं केंद्र में सरकार गठन से जुड़ी राजनीतिक मजबूरियों से भी जुड़ी हैं। दरअसल, बिहार के मामले में अभाव और गरीबी की बात नई नहीं है। रोजी-रोजगार को लेकर लाखों लोग हर साल पलायन करने के लिए मजबूर हैं। बड़े उद्योग तो दूर वहां छोटे और मझोले उद्योगों की राह भी कठिन रही है। अलबत्ता, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं महादलित नेता जीतन राम मांझी के केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री बनने के बाद कुछ उम्मीदें जरूर जगी हैं। खुद मांझी भी मानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें अपने विजन का मंत्रालय दिया है ताकि छोटे और मझोले उद्योगों को बढ़ाकर विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचा जा सके। शपथ ग्रहण के तुरंत बाद मोदी सरकार में सबसे उम्रदराज इस मंत्री ने इस दिशा में ईमानदारी और लगन से काम करने का भरोसा भी जताया है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध बिहार फिर से आर्थिक समृद्धि और रोजगार सृजन के नये आयाम तलाश रहा है। ऐसे में इस मंत्रालय की भूमिका वरदान साबित हो सकती है। दरअसल, बिहार में छोटे और मझोले उद्योगों का राज्य की आर्थिक संरचना को मजबूती देने में बड़ा योगदान है, जिसमें राज्य के कृषि आधारित उद्योग, हस्तशिल्प, खादी, हथकरघा उद्योग प्रमुख रूप से शामिल हैं। एमएसएमई मंत्रालय की विभिन्न योजनाएं-प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया आदि बिहार के उद्यमियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी साबित हो रही हैं। इनके माध्यम से नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिला है, जिससे रोजगार के नये अवसर सृजित हो रहे हैं। अलबत्ता, दरकार इस बात की है कि राज्य के उद्यमियों को मंत्रालय की योजनाओं और सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी हो और उनका सही तरीके से क्रियान्वयन हो। उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, वर्कशॉप और मार्केटिंग कैंप का आयोजन भी किया जाना चाहिए। मांझी के मंत्री बनने से बिहार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावनाएं बढ़ी हैं। उनके नेतृत्व में मंत्रालय के अब तक के कामकाज से लगता है कि मांझी का ध्यान शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों पर है। रोजगार अवसर बढ़ाने के लिए उनका अनुभव और योजनाएं बिहार के युवाओं के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं। कृषि और उद्योगों के विकास के माध्यम से रोजगार सृजन की बात कारगर साबित हो सकती है। राज्य की आर्थिक संरचना में एमएसएमई पहले से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनको नई मदद और सुविधाएं औद्योगिक विकास का विकेंद्रित ढांचा खड़ा कर सकती हैं, जिससे कई क्षेत्रों के लोगों के जीवन में बदलाव संभव है। दिलचस्प है कि बिहार की बदली राजनीति के साथ प्रदेश में विकास की नई बयार बह रही है। बजट में बिहार के लिए 26 हजार करोड़ के पैकेज के ऐलान के बाद खासकर औद्योगिक विकास को लेकर उम्मीदें कोरी नहीं कही जा सकतीं। गया में औद्योगिक विकास, काशी की तर्ज पर महाबोधि और विष्णुपद मंदिर कॉरिडोर, राजगीर और नालंदा का विकास, पटना-पूर्णिया एक्सप्रेसवे, बक्सर-भागलपुर राजमार्ग और गंगा नदी पर दो पुलों के निर्माण आदि की महत्त्वपूर्ण घोषणा निश्चित रूप से बिहार की तरक्की का नया आयाम साबित होगा। बजट की घोषणा रोजगार, कौशल विकास और पर्यटन की संभावनाओं से भरी है। जरूरी है कि इस दिशा में तेजी से काम हो और जमीनी स्तर पर किसी तरह का राजनीतिक विरोध या दुविधा आड़े न आए। गौरतलब है कि बजट में कौशल विकास और रोजगार के साथ गरीब, युवा, महिला और किसानों पर बल दिया गया है, जिसे विकास का सकारात्मक संकेत कहा जा सकता है। बैंकों से ऋण लेना भी आसान कर दिया गया है। मुद्रा लोन की सीमा 10 से 20 लाख कर दी गई है। खरीदारों को ट्रेडर्स प्लेटफार्म पर अनिवार्य रूप से शामिल करने के लिए कारोबार की सीमा को 500 करोड़ से घटाकर 250 करोड़ कर दी गई है। एमएसएमई क्षेत्र में 50 मल्टी प्रोडक्ट फूड यूनिट स्थापित करने के लिए भी वित्तीय सहायता दी जाएगी और पारंपरिक कारीगरों को इंटरनेशनल मार्केट में उनके प्रोडक्ट बेचने में सक्षम बनाया जाएगा। उनके लिए पीपीपी मोड में ई-कॉमर्स निर्यात केंद्र भी स्थापित किए जाएंगे।

राहुल की विभाजनकारी राजनीति और बेतुकें तर्क....

ललित गर्ग

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका में राहुल गांधी जिस तरह की बातें कह एवं कर रहे हैं, निश्चित ही यह उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता को ही दर्शा रहा है, वे लगातार विभाजनकारी राजनीति को प्रोत्साहन देते हुए भूल जाते हैं कि उनके ऊपर देश को तोड़ने नहीं, जोड़ने की जिम्मेदारी है। प्रश्न है कि कब राहुल गांधी इस महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदारी वाले पद पर रहते हुए उसके साथ न्याय करेंगे? वे जानते नहीं कि वे क्या कह रहे हैं। उससे क्या नफा-नुकसान हो रहा है या हो सकता है। वे तो इसलिए बोल रहे हैं कि वे बोल सकते हैं, उन्हें बोलने की आजादी है, लेकिन इसका नुकसान देश को भुगतना पड़ रहा है। नेता प्रतिपक्ष ने महाभारतकालीन चक्रव्यूह और पद्म व्यूह का सहारा लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधना चाहा है। जिस तरह से उन्होंने बजट पूर्व हलवा परम्परा में वित्तमंत्री के साथ खड़े लोगों को जाति आधारित संरचना बताया वह कहीं से भी तार्किक नहीं लगता। इस सेरेमनी में तो उस वक्त मंत्रालय के जो सीनियर अफ़सर होते हैं, वे ही मौजूद रहते हैं। इसमें जातिवाद कहाँ से आया? यह बात समझ से परे है। यही वजह है कि हलवा परम्परा की जब राहुल गांधी अपनी तरह से विवेचना कर रहे थे, तब वित्त मंत्री ने माथा पकड़ लिया था। राहुल गांधी ने जो तुलनाएँ की, वे निश्चित रूप से अतिरेक या अतिशयोक्ति कही जा सकती हैं। हर दिखते समर्पण की पीठ पर स्वार्थ चढ़ा हुआ है। इसी प्रकार हर अभिव्यक्ति में कहीं न कहीं स्वार्थ की राजनीति है, सत्तापक्ष को नुकसान पहुंचाने की ओछी मनोवृत्ति है। लोकसभा में आम बजट पर चर्चा करते हुए नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अपना पुराना आरोप नए सिरे से दोहराया कि बजट बनाने वालों में कोई एससी-एसटी और ओबीसी अधिकारी नहीं होता, उससे यदि कुछ स्पष्ट है तो यही कि वह समाज को बांटने वाली विभाजनकारी राजनीति पर अड़े हैं। इस तरह की बेतुकी बातें करते हुए वे क्यों नहीं समझना चाहते कि ऐसी स्थिति और इस तरह की परम्परा कांग्रेस की तत्कालीन सरकारों के समय से ही चली आ रही है। कांग्रेस ही इसकी जिम्मेदार हैं, लेकिन वह कुछ समझने के लिए तैयार ही नहीं। राहुल गांधी एक तरह से यह कहना चाह रहे हैं कि अनारक्षित वर्गों के अधिकारी आरक्षित वर्गों के हितों की उपेक्षा करते हैं। इस तरह वे देश की परम्पराओं एवं लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के समझे बिना ऐसा कुछ कह जाते है जो देश की एकता, अखण्डता एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विपरीत होता है। राहुल के बोलने का बचकानापन तो कभी-कभी सारी हदें पार कर जाता है। एक बार तो उन्होंने यहां तक कह दिया हैं कि उच्च जाति के शिक्षक प्रश्नपत्र बनाते हैं, इसलिए आरक्षित वर्ग के छात्र फेल हो जाते हैं। आखिर यह भड़काऊ राजनीति नहीं तो और क्या है? राहुल गांधी ने बजट पर सरकार को घेरने के लिए महाभारतकालीन घटनाओं का उल्लेख करते हुए यह भी कह डाला कि जैसे अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेर लिया गया था, उसी तरह देश को भी मोदी सरकार ने घेर रखा है। उन्होंने प्रधानमंत्री समेत जिन छह लोगों को इस घेराबंदी के लिए जिम्मेदार ठहराया, उसमें अंबानी-अदाणी के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत को भी शामिल कर लिया। उन्होंने दावा किया है कि भारत पर कब्जा करने वाले चक्रव्यूह के पीछे तीन ताकतें है- पहली एकाधिकार पूंजी का विचार, जिसमें दो लोगों को देश की समूची संपत्ति का मालिक बनने की अनुमति देना। दूसरा देश की संस्थाएं, एजेंसियां, सीबीआई, ईडी, आयकर विभाग हैं एवं तीसरी राजनीतिक कार्यप्रणाली है। इन तीनों ने मिलकर देश को तबाह कर दिया है। इस तरह के बयानों एवं बोलों से स्पष्ट है कि वह मनमाने और बेतुके तर्क देने में संकोच नहीं कर रहे हैं। वह अपनी ऐसी बातों से चर्चा में तो आ जाते हैं और उनके समर्थक उनकी वाह-वाही करने में भी जुट जाते हैं, लेकिन नेता प्रतिपक्ष के तौर पर वह न तो समाज को कोई सही दिशा दे पा रहे हैं और न ही सरकार को कोई सार्थक सुझाव। यह स्थिति देश के लिये नुकसानदायी है, चिन्तनीय है। राहुल गांधी के रुख-रवैये एवं अतिश्योक्तिपूर्ण तर्कों से यही लगता है कि वह अभी भी चुनावी मुद्रा में हैं। अपनी चुनाव पूर्व की आक्रामकता से वे उपरत नहीं हो पाये हैं। वे सदन के भीतर एवं सदन के बाहर ऐसी ही तर्कहीन बातों एवं बयानों से अराजक माहौल बना रहे हैं। आखिर वह जो कुछ मोदी सरकार से चाह रहे हैं, उसे कांग्रेस संगठन और साथ ही अपने दल द्वारा शासित राज्य सरकारों में क्यों लागू नहीं कर रहे हैं? क्या मोदी सरकार ने उन्हें ऐसा करने से रोक रखा है? उन्हें बताना चाहिए कि कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश में बजट बनाने में आरक्षित वर्गों के कितने अधिकारियों की हिस्सेदारी होती है? वह मोदी शासन की तरह मीडिया में भी आरक्षित वर्गों के प्रतिनिधित्व का प्रश्न भी कई बार उठा चुके हैं, लेकिन यह देखने को तैयार नहीं कि आखिर उनके परिवार के प्रभुत्व वाले मीडिया संस्थान में इन वर्गों के कितने लोगों की हिस्सेदारी है? लोकसभा की कार्रवाई कांग्रेसी एवं विपक्षी सांसदों के वाक आउट, हंगामे, अनर्गल बहस की भेंट चढ़ रही है। विपक्षी अपनी सार्थक भूमिका का निवर्हन करने की बजाय लगातार सत्तापक्ष को घेरने एवं आरोप-प्रत्यारोप की घटिया राजनीति में लगा है। जिससे सरकार को कुछ भी हासिल नहीं हुआ। देश भी इन त्रासद घटनाओं से कुछ हासिल नहीं कर पा रहा है। आखिर सरकार करे, तो क्या करे? उसने हर सत्र के शुरू होने से पहले सर्वदलीय बैठकें करके देख ली।

दोनों सदनों के अध्यक्ष और उप-सभापति ने बारंबार समझा-समझाकर सहयोग की अपील कर ली। प्रधानमंत्री ने भी बार-बार सदस्यों से सदन को शांतिपूर्वक बहस के जरिये चलने-चलाने की विनम्र अपील कर डाली।

भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा का मंगल अभिषेक के साथ भक्तों ने भव्य स्वागत

भिलाई विश्व परिवार। भगवान महावीर स्वामी के पावापुरी जी अहिंसा रथ जो दिल्ली से भारत भ्रमण पर निकला है और लगभग 13 राज्यों के जैन मंदिरों में भारत भ्रमण . की यात्रा करते हुए भिलाई पहुंचे भव्य रथ के द्वारा स्थित भगवान महावीर स्वामी के जियो और जीने दो और अहिंसा परमो धर्म का संदेश प्रचारित करते हुए
वैशाली नगर जैन मंदिर नेहरू नगर जैन मंदिर एवं त्रिवेणी जैन तीर्थ सेक्टर 6 एवं रूआबांदा दिगंबर जैन मंदिर में मंगल प्रवेश किया। जहां रथ में विराजित 1008 भगवान महावीर स्वामी के काले पाषाण की प्रतिमा का भक्तों ने मंगल अभिषेक और शांति धारा किया
श्री पारसनाथ दिगंबर जैन सभा सेक्टर 6 समिति के अध्यक्ष प्रशांत जैन संरक्षक ज्ञानचंद बाकलीवाल महावीर प्रकाश निगोदिया. प्रवीण छाबड़ा डॉक्टर जिनेंद्र जैन दीपचंद जैन मुकेश जैन उपाध्यक्ष एवं प्रचार प्रचार प्रभारी प्रदीप जैन बाकलीवाल भारत जैन सिंपी जैन कोषाध्यक्ष जिनेंद्र जैन वरुण जैन कमल जैन भागचंद जैन निर्मल कोचर संजीव जैन प्रमोद नहर गौरव जैन राकेश कासलीवाल सुरेंद्र जैन ऋषभ जैन. मनीष जैन अरविंद जैन कजोडमल जैन मनोज पहाड़िया अशोक पहाड़िया अनिकेत जैन जितेंद्र जैन अजीत जैन आशीष जैन आदि ने सैकड़ो भक्तों के साथ मंगल दर्शन और पूजन किया। रूआबांदा मंदिर के भूपेंद्र जैन राजेश सुपर बाजार राजीव जैनको पंडित राजेश जैन सुनील जैन राहुल जैन सुरेंद्र जैन सुधीर जैन अनिल जैन आदि ने भक्ति भाव के साथ अभिषेक किया और महिलाओं ने भगवान महावीर स्वामी की मंगल आरती करते हुए भक्ति भाव के साथ पावापुरी रथ . के सारथी अंकित जैन के साथ उनके साथियों का तिलक लगाकर अभिनंदन . मानव सेवा परिसर जैन भोजनालय सेक्टर 9 एवं समस्त जैन मंदिर में स्वागत भी किया .
भगवान महावीर स्वामी के आगामी वर्ष में होने वाले निर्वाण महोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्य 108 गुप्ती सागर महाराज जी परम पूज्य . मुनिराज 108 श्री प्रज्ञा सागर महाराज जी
परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुनील सागर महाराज जी के मंगल आशीर्वाद से राष्ट्रीय अध्यक्ष गजराज जी गंगवाल जी और समिति सदस्यों के मार्गदर्शन में यह भव्य रथ अभी भारत भ्रमण पर निकला है. दुर्ग की ओर प्रवेश किया है. श्री पारसनाथ दिगंबर जैन महासभा सेक्टर 6
प्रदीप जैन . बाकलीवाल एवं प्रचार प्रचार प्रभारी

भव, तन, भोग यह तीन भ्रम है, इनकी सत्यता को जो समझाये, वो ही धर्म है : मुनि प्रणम्य सागर महाराज

जयपुर विश्व परिवार।। संत शिरोमणि आचार्य 108 विद्यासागर महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज के मुखारबिन्द से मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर कवि भूधरदास द्वारा विरचित पार्श्वनाथ पुराण का वाचन किया गया जिसमें जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के चार भव पूर्व के वृतांत के अन्तर्गत बताया कि वज्रनाभि चक्रवर्ती निर्ग्रन्थ मुनि का दर्शन करता है तो उसे अपना राज, तन व अन्य प्रकार के सुख निर्गन्थों के दिगम्बरत्व के आगे बेबस लगने लगता है। मुनि श्री ने कहा कि अपने परिचित की असमय को निकट देखना, यह सोचना कि जिन्दगी जिन्दा कहा है, फिर आचार्य विद्यासागर महामुनिराज के दर्शन होना और यह महसूस करना कि जिन्दगी जिन्दा यहा है। जब तक जीव अलौकिश सुख से सम्पन्न नहीं होता है तो वह लौकिक सुख को भी प्राप्त नही कर सकता है। मुनि श्री ने कहा कि सच्चे देव शास्त्र गुरु को अपनाने से और उनके बताये हुए मार्ग पर चलने से सात तत्वों का ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है। भव - तन - भोग यह तीन भ्रम है इनकी सत्यता को समझाये, वो ही धर्म है। मुनि श्री ने धर्म को परिभाषित करते हुए बताया कि संसार - शरीर - भोगों का स्वरुप सही समझना ही धर्म है।
इससे पूर्व शुभम भैया एवं संगीतकार नरेन्द्र जैन के निर्देशन में आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की संगीतमय पूजा की गई। आचार्य समय सागर महाराज एवं मुनि प्रणम्य सागर महाराज का अर्घ्य चढाया गया।
तत्पश्चात मुनि निष्कलंक सागर एवं क्षुल्लक समन्वय सागर के गृहस्थ अवस्था के परिजन विनय जैन जबलपुर परिवार द्वारा संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज एवं आचार्य समय सागर महाराज के चित्र का जयकारों के बीच अनावरण किया गया। भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। तत्पश्चात मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन किया।
अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि विशिष्ट अतिथि के रूप में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के कोषाध्यक्ष विवेक काला, पूर्व मुख्य सचिव अशोक जैन, पूर्व लोकायुक्त पदम चन्द जैन, श्री श्रमण संस्कृति संस्थान के कार्याध्यक्ष प्रमोद पहाड़िया, राजस्थान जैन सभा जयपुर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष दर्शन बाकलीवाल, मंत्री विनोद जैन कोटखावदा, महावीर जी क्षेत्र के प्रशासनिक समन्वयक भारतभूषण जैन एवं अपभ्रंश साहित्य अकादमी छात्रावास के छात्रों ने मुनि श्री को श्रीफल भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।
समिति के संगठन मंत्री अशोक सेठी एवं सांस्कृतिक मंत्री जम्बू सोगानी ने बताया कि मीरामार्ग के श्री आदिनाथ भवन पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में गुरुवार 8अगस्त को प्रात: 8.15 बजे श्री पार्श्वनाथ कथा का संगीतमय आयोजन आयोजन किया जाएगा।इस मौके पर आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की पूजा एवं मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगें। मुनि श्री की आहारचर्या प्रात: 9:40 बजे होगी। दोपहर में 3.00 बजे शास्त्र चर्चा होगी। गुरुभक्ति एवं आरती सांय 6:30 बजे एवं वैयावृत्ति रात्रि 8:30 बजे होगी। रविवार को मनायेगे मुकुट सप्तमी एवं भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव - संगठन मंत्री अशोक सेठी ने बताया कि मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में रविवार 11 अगस्त को जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा इस मौके पर शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की रचना की झांकी सजाई जाएगी। प्रात: 6.30 बजे से भगवान पार्श्वनाथ की पूजा एव श्री कल्याण मंदिर पूजा विधान साजो के साथ किया जाएगा। प्रात: 8.00 बजे निर्वाण लाडू चढाया जायेगा। तत्पश्चात मुनि प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगें ।

जंहा जंहा धर्म होगा वंहा वंहा शांति अवश्य होगी

रायपुर विश्व परिवार।। जंहा जंहा शांति हो वंहा वंहा धर्म हो यह जरूरी नहीं लेकिन जंहा जंहा धर्म होगा वंहा वंहा शांति अवश्य होगी यह निश्चित है,हिंसा कभी भी शस्त्र से अथवा आकुल व्याकुल परिणामों से नही रूक सकती, लेकिन जंहा धर्म होगा वंहा पर शांति अवश्य आऐगी इसलिये सम्यकज्ञान का प्रचार प्रसार अवश्य होंना चाहिये उपरोक्त उदगार निर्यापक मुनि श्री नियमसागर जी महाराज ने शीतलधाम विदिशा में प्रात:कालीन प्रवचन सभा में व्यक्त किये।उन्होंने कहा कि शस्त्रों से शांति नहीं होती आध्यात्म ही एक ऐसी शरण है जिसमें प्रत्येक देश,प्रत्येक नगर प्रत्येक तहसील प्रत्येक घर में प्रत्येक जीव और प्रत्येक मानव को आध्यात्म समझना होगा भगवान महावीर ने कहा जिओ ओर जीने दो यह एकआध्यात्मिक संदेश हेऔर इसी मार्ग से विश्व का कल्याण संभव है उन्होंने कहा कि अविवेक आकुलता, जल्दबाजी में जितने भी कार्य किये जाते है वह समस्या को घटाते नहीं वल्कि ब ?ाते ही है उन्होंने जीवन व्यवहार की बात बताते हुये कहा किसी भी कार्य की सिद्धी अनुशासन से है,यदि अनुशासन आपके जीवन में नहीं है तो सारे जीवन व्यवहार के कार्य बिग ?गे उन्होंने कहा कि कोई भी बात बोलने से पहले उसको तोलो,उसे एकदम मत बोलो,उसमें नम्रता का रस घोलो तो मोक्षमार्ग सरल हो जाऐगा। मुनि श्री ने कहा कि मोक्षमार्ग एकांतबादी नहीं है में ही सही हुं यह कहना जल्दबाजी होगी उन्होंने कहा कि अशांति का जन्म आकुलता के कारण होता है,आजकल असत्य का बहुमत है इसलिये सत्य छिपकर रोता है ऐसे प्रश्न खड़े होते है। सहनशीलता नहीं होंने से उदवेगता आती है जीवन में सबसे बड़ा पुरुषार्थ व्यक्ति का सहनशील होंना ही है यदि वह सहनशील हो गया तो धर्म उसके अंदर प्रवेश कर जाऐगा जैसे स्वाति नक्षत्र की एक जल की बूंद मोती वन जाती है। मुनि श्री के प्रवचन 8:30 से चल रहे है।

जीवन में जब भी विपत्ती आए तो घबराना नहीं : मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी महाराज

नांदणी। पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज जी के परम शिष्य विचित्र बाते प्रणेता मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी महाराज जी ने कहा - युवाओं जीवन में जब भी विपत्ती आए, तो घबराना नहीं । भूल से भी पारस बाबा को भुलना नहीं । क्योंकी जब छाये थे संकट के बादल, तो उन्होने किसी को न बुलाया था । बस शांतीपूर्वक ध्यान किया । तो स्वयं देवोने आकर रक्षा का प्रण उठाया था । इसलिए विपत्ती में जो रोए वो पारस प्रभू का भक्त हो नहीं सकता । और जो विपत्ती में मुस्कुराए वो पारस प्रभू से कभी जुदा हो नहीं सकता ।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./13634/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 06-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13634
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F00159** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SATISH BAIS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BISHMBHAR BAIS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VIPIN KUMAR BAIS** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O NAND KUMAR BAIS** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./13568/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 06-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13568
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F01434** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MOHAMMAD DILSHAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MOHD NASIR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1) KU. SUHASTI NAYAK, 2) KU. BABITA NAYAK** पिता/पति श्री/श्रीमती **D/O DAYANIDHI NAYAK** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./13674/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13674
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652B00414** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **AKHTAR HUSAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **AHMED HUSAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1) MD ZAFFER IQBAL S/O ABDUL SUBHAN, 2) MASUMA TANWEER** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MD ZAFFAR IQBAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 341 दिनांक 07.08.2024
वार्ड का नाम- ठाकुर देव वार्ड
वार्ड क्र. 18 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 18 मांग **पंजी क्र. 812 युआईडी 35559** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **ममता उपाध्याय/संजय उपाध्याय** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सावित्री साहू/लीलाधर साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **06-09-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./13648/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 06-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13648
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **27** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220F0348A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHIBEN DAS, SIDDHARTH DAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. PRAMOD CHANDRA DAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री सिद्धर्थ दास** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता-स्व. श्री प्रमोद चंद्र दास** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे (जोन कमिश्नर) जोन क्रमांक- (2) नगर पालिक निगम रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./13450/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13450
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445C00097** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHRIJAN CHANDRAKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **L.T. RAJENDRA CHANDRAKAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. ROSHAN KAUR GURPREET SINGH KOCHAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI GURPREET SINGH KOCHAD** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./13189/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13189
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445O00410** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **HARJEET MAKHIJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ANIL MAKHIJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ASHOK KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI NAND KISHOR PRASAD** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./13300/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13300
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446D00305** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DORI LAL SIDAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JAI SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. SUNITA SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI KARN SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ... वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /13682/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13682
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **01** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00252** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **M/S SHREE RAM VIHAR PARTNER - PAWAN KUMAR AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM KUMAR AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. SARITA DEVI AGRAWAL W/O KRISHNA KUMAR AGRAWAL 2. ABHISHEK AGRAWAL S/O KRISHNA KUMAR AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा। -सूचना जारी करें-

श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /13679/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13679
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **01** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00250** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **M/S SHREE RAM VIHAR PARTNER - PAWAN KUMAR AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM KUMAR AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NEHA AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KRISHNA KUMAR AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा। -सूचना जारी करें-

श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /13688/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13688
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **01** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801N00697** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MANJEET KAUR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **TARANJEET SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **REETA DEVI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VINOD MAHATO** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा। -सूचना जारी करें-

श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 340 दिनांक 07.08.2024
वार्ड का नाम- संत रविदास वार्ड
वार्ड क्र. 23 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **23** मांग **पंजी क्र. 426 युआईडी 23864** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **राधेलाल साहू/सरजू साहू** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **गिरजा साहू/ शिव कुमार साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **06-09-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./13504/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 07-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13504
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446C00172** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NARAYAN DAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. DURGA BHAWNANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LT. NARAYAN DAS BHAWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ... वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 08 अगस्त 2024

संक्षिप्त समाचार

नाबालिग को छेड़ने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिले की डोंगरगांव पुलिस ने एक नाबालिक लड़की के साथ छेड़छाड कर जान से मानने की धमकी देने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है तथा उनके पास से चाकू बरामद किया है। मिली जानकारी के अनुसार थाना डोंगरगांव मे ग्राम सालिकझिटीया निवासी प्रार्थिया के द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराया था कि उसके साथ दो व्यक्ति के द्वारा छेड़छाड कर सब्जी काटने वाले चाकू को टिकाकर जान से मानने की धमकी दी गई है। शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफअपराध कायम कर विवेचना मे लिया गया। मामले के गंभीरता को देखते हुये त्वरित कार्यवाही करते हुये तत्काल पुलिस टीम गठित कर आरोपियो की पता तलाश की गई तथा आरोपी राजकुमार निषाद पिता यादवराम निषाद, उम्र-19 साल, , 2. भुषण सोनकर पिता संतराम सोनकर, उम्र-20 साल पता दोनो ग्राम अर्जुनी, थाना डोंगरगावं जिला राजनांदगांव को पकड़कर थाना लाकर पुछताछ किया जिन्होने दिनांक घटना समय को उक्त घटना को अंजाम देना स्वीकार किया। जिसके बाद आरोपियों के खिलाफ धारा 74 , 351(2) 3(5) बीएनएस एवं 8 पाक्सो एक्ट के तहत अपराध कायम किया गया।

लापता मासूम का जंगल में मिला कटा सिर

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले के सिहावा थाना क्षेत्र बीरगुड़ी वन परिक्षेत्र के ग्राम कोरमूड में घर के सामने खेलते हुए गायब तीन साल के बच्चे का कटा सिर जंगल में मिला है। वन विभाग और ग्रामीण बच्चे के बाकी शरीर की तलाश कर रहे। बता दें कि सोमवार को सिहावा थाना क्षेत्र बीरगुड़ी वन परिक्षेत्र के ग्राम कोरमूड में घर के सामने खेल रहा बच्चा तीन वर्षीय ऋतिक मरकाम गायब हो गया था। मौके पर से तेंदुए के पैर के निशान देखे जाने की सूचना पर वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची तथा परिजनों तथा ग्रामीण के साथ लापता बच्चे की तलाश कर रहे थे। वहीं मंगलवार को जंगल में बच्चे का कटा हुआ सिर मिला है। बच्चे के बाकी अंगों की तलाश अभी भी जारी है। आशंका जताई जा रही है कि घर के बाहर खेल रहे बच्चे को तेंदुआ उठा ले गया होगा।

कलेक्टर को साप्ताहिक जनदर्शन में नागरिकों ने बताई अपनी समस्याएं

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने कलेक्टोरेट में आयोजित साप्ताहिक जनदर्शन में जिले के विभिन्न स्थानों से आए नागरिकों की समस्याएं सुनी और अधिकारियों को निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि दूरस्थ क्षेत्रों से जनसामान्य यहां आते हैं, उनकी समस्याओं का निराकरण करते हुए उन्हें शासन की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लाभान्वित करना है। आवेदनों का अवलोकन कर नियमानुसार पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित करने के लिए कहा। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को उनके विभाग से संबंधित आवेदन प्रदान कर शीघ्र निराकरण करने के लिए निर्देशित किया। जनदर्शन में निजी भूमि से अवैध कब्जा हटाने, आबादी पट्टे की भूमि का एनओसी दिलाने, राजस्व अभिलेख में नाम दुरूस्त करने, विभिन्न शासकीय योजनाओं से लाभ दिलाने जैसे आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का प्राथमिकता के साथ निराकरण के लिए निर्देश दिए।

उज्जैन में 1,500 भक्तों ने एक साथ डमरू बजाकर गिनीज रिकॉर्ड बनाया

उज्जैन: श्रावण मास के पावन महीने में 1,500 भक्तों ने उज्जैन के शक्ति पथ महाकाल लोक में एक साथ डमरू बजाकर एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किया। यह आयोजन सोमवार को सुबह 11:30 बजे श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंधन समिति और मध्य प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक मामलों के विभाग द्वारा आयोजित किया गया था। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने स्थल पर आधिकारिक घोषणा कर इस अद्वितीय कीर्तिमान को मान्यता दी। रिकॉर्ड बनाने के इस प्रयास की परिकल्पना और क्रियान्वयन विश्व रिकॉर्ड सलाहकार निश्चल बरोट द्वारा किया गया, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए सभी मानदंड पूरे किए गए हैं। ऐसी मान्यता है कि डमरू को भगवान शिव द्वारा बनाया गया था। ऐसा भी माना जाता है कि इस पवित्र वाद्य यंत्रसे उत्पन्न हुई आध्यात्मिक ध्वनियों द्वारा ब्रह्मांड का निर्माण और नियमन हुआ था। इस वाद्य यंत्र को सामूहिक रूप से बजाने से इस आयोजन में गहन आध्यात्मिक महत्ता जुड़ गई। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद उमेशनाथ जी महाराज, सांसद अनिल फिरोजिया, उज्जैन उत्तर विधायक अनिल कालूहेड़ा, घट्टिया विधायक सतीश मालवीय, उज्जैन के महापौर मुकेश टटवाल, उज्जैन नगर निगम अध्यक्ष श्रीमती कलावती यादव, नगर जिला अध्यक्ष विवेक जोशी और उज्जैन उत्तर विधानसभा संयोजक जगदीश पांचाल सहित अनेक गणमान्य लोगों ने अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

जिले के सभी 110 संकुलों में पालक-शिक्षक मेगा बैठक संपन्न

एडीएम, संयुक्त कलेक्टर-एसडीएम सहित जिले के सभी अधिकारी बैठक में हुए शामिल

सुकमा(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले के सभी प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूलों में पालकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने और उन्हें बच्चों की प्रगति से अवगत कराने तथा बच्चों में भविष्य की सम्भावनाओं का आंकलन कर पालकों के साथ समन्वय साधते हुए संयुक्त रूप से परिणामोन्मुखी प्रयास करने हेतु कलेक्टर श्री हरिस एस. के मार्गदर्शन में मंगलवार को जिले के सभी 110 संकुलों में पालक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी श्री जीआर मण्डावी ने बताया कि मंगलवार को संकुल स्तर पर आयोजित कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपादित करने जिले के सभी अधिकारियों को संकुल की मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी दी गई। इसके अंतर्गत अपर कलेक्टर, जिला कार्यालय में पदस्थ संयुक्त कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर, सभी राजस्व अनुविभागीय अधिकारियों सहित अन्य विभागों के सभी अधिकारी 110 संकुलों में मेगा पालक-शिक्षक बैठक में शामिल हुए। जिले के सभी अधिकारियों को संबंधित संकुल केन्द्रों का निरीक्षण कर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्रतिवेदन करने के निर्देश दिए गए थे,जिसके अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में यह समन्वित पहल किया गया। जीवन में बच्चों के स्कूली शिक्षा के समय सभी पालकगण अहम भूमिका अदा करते हैं, जो निरंतर पढ़ाई को लेकर बच्चों को पढ़ाई की प्रति रूझान बनाए रखते हैं। ऐसे में बच्चों के साथ-साथ पालकों को शिक्षा के प्रति झुकाव होना आवश्यक हो जाता है। कलेक्टर श्री हरिस.एस ने स्थानीय बोली गोंडी व हल्बी में आमंत्रण पत्र लिखकर जिले के सभी 110 संकुल में 06 अगस्त को बच्चों के माता-पिता व अभिभावकों को मेगा बैठक में शामिल होने की अपील की गई थी। जिसका व्यापक असर मेगा बैठक में देखने को मिला। बैठक में दूरस्थ एवं संवेदनशील तहसील जगरगुण्डा एवं कोंटा के संकुल में आयोजित मेगा बैठक में बड़ी संख्या में पालकगण शामिल हुए। एक समय था जब माओवाद प्रभावित क्षेत्र में स्कूल जाने के लिए बच्चे कतराते थे। वहीं आज शासन-प्रशासन के पहल से उत्साह के साथ बच्चे ही नहीं अपितु पालकगण स्कूल की बैठक में सम्मिलित हुए। यह निश्चित ही यह दर्शाता है कि अब माओवाद प्रभावित क्षेत्र में शिक्षा के प्रति लोग सजग हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री हरिस एस.के निर्देशन एवं जिला पंचायत सीईओ श्रीमती नम्रता जैन के मार्गदर्शन में नियद नेल्लानार योजनांतर्गत चिन्हांकित गांव सहित जिलेवासियों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति लोगों को निरंतर जागरूकता करने का सकारात्मक प्रयास किया जा रहा है। न्यौता भोज से अपनेपन की भावना होगी विकसित- बैठक में बताया गया कि न्योता भोज एक सामुदायिक भागीदारी है। जिसमें विभिन्न महत्वपूर्ण अवसरों पर जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ, राष्ट्रीय पर्व जैसे अवसरों पर शाला के बच्चों को पौष्टिक आहार रुचिकर भोजन उपलब्ध कराने की एक अच्छी पहल शासन द्वारा की गई है। न्यौता भोज से समुदाय के बीच अपनेपन की भावना विकसित होगी।

पालक अपने बच्चे को तेज वाहन नहीं चलाने की समझाइश दें - कलेक्टर धर्मेश साहू

कलेक्टर धर्मेश साहू ने सड़क सुरक्षा की बैठक ली

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश साहू ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में सड़क सुरक्षा की बैठक ली। कलेक्टर ने वाहन को सामान्य ड्राइविंग करने के लिए कहा। सभी पालक अपने बच्चे को तेज वाहन नहीं चलाने की समझाइश दें ताकि बच्चों की जान जोखिम नहीं हो। कलेक्टर ने वाहन चालकों को हेलमेट और सीट बेल्ट पहनकर वाहन चलाने के लिए कहा। पुलिस सहित सभी अधिकारियों को कलेक्टर ने कहा कि सड़क किनारे नशे से दूर रहने, यातायात नियमों का पालन करने के लिए होर्डिंग लगाने के लिए कहा। कलेक्टर ने युवाओं के द्वारा नशे के लिए उपयोग किए जा रहे सभी प्रकार के प्रतिबंधात्मक सामग्रियों की रोकथाम के लिए पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया। कलेक्टर ने सभी निर्माण विभाग पीएचई, विद्युत, पीडब्ल्यूडी और दूरसंचार बीएसएनएल सहित निजी कंपनी एयरटेल, जियो सहित केबल चैनल आदि को निर्देशित किया कि सड़क के निर्धारित सीमा को छोड़कर खुदाई का कार्य करें। कलेक्टर ने बैठक में दुर्घटनाजन्य ब्लॉक स्पॉट के पास दिशासूचक और आवश्यक निर्माण कार्य करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। बैठक में कलेक्टर ने जिले के पशुपालकों को कहा कि वे अपने गाय, बछड़े आदि का देखभाल अच्छे से अपने घरों में करें, खुला न छोड़ें और सड़क पर बिल्कुल भी नहीं बैठे इस बात का ध्यान रखें और घर पर व्यवस्था करें। कलेक्टर ने इसकी रोकथाम की रूपरेखा तैयार की है, जिसके लिए बुनियादी तौर पर पशु चिकित्सा विभाग को बचे हुए गाय बछड़े को पशुपालक के नाम की टैगिंग की जाएगी। यदि गाय सड़क पर मिले तब उसे ग्राम पंचायत और नगरीय निकाय विभाग द्वारा धरपकड़ कर संबंधित पशुपालक से जुर्माना वसूला जाएगा, उस जुर्माना राशि से पशुओं को देखभाल के लिए चारा पानी की व्यवस्था की जाएगी। यदि कांजी हाउस से पशुपालक गाय बछड़े को घर नहीं ले जाते तो उनके विरूद्ध कुर्की जैसे कार्यवाही की जाएगी। बैठक में एसपी पुष्कर शर्मा, संयुक्त कलेक्टर एस के टंडन, परियोजना निदेशक हरिशंकर चौहान, एएसपी कमलेश्वर चंदेल, एसडीएम डॉ. स्निग्धा तिवारी, अनिकेत साहू, डिप्टी कलेक्टर डॉ वर्षा बंसल, डीएसपी अविनाश मिश्रा, एसडीओपी विजय ठाकुर, तहसीलदारगण सीईओ, सीएमओ सहित पशु चिकित्सा अधिकारी उपस्थित थे।

नियद नेल्लानार योजना : माओवाद प्रभावित क्षेत्र की महिलाओं को दिया गया कौशल प्रशिक्षण

कांकेर(विश्व परिवार)। राज्य शासन की महत्वाकांक्षी योजना 'नियद नेल्लानार' (आपका आदर्श गांव योजना) के अंतर्गत बस्तर संभाग के माओवाद प्रभावित क्षेत्रों के गांवों में शासन की योजना के शत-प्रतिशत सैचुरेशन के साथ सभी परिवारों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। साथ ही हितग्राहियों को उनकी रूचि एवं योग्यता के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कलेक्टर श्री नीलेश महादेव क्षीरसागर के निर्देशानुसार एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सुमित अग्रवाल के मार्गदर्शन में नियद नेल्लानार योजना अंतर्गत जिले के माओवाद प्रभावित क्षेत्र की महिलाओं को लाइवलीहुड कॉलेज द्वारा कौशल प्रशिक्षण दिया गया। लाइवलीहुड कॉलेज के सहायक परियोजना अधिकारी ने बताया कि जिले के युवाओं को स्वरोजगार से जोडने एवं उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए लाईवलीहुड कॉलेज कांकेर द्वारा अनूठी पहल की जा रही है। प्रथम चरण में जिले में स्थापित कैंप पानीडोबीर के अंतर्गत सम्मिलित ग्रामों में किये गये सर्वे एवं काउंसलिंग के अनुसार कुल 20 युवतियों ने ''हॉफ पेंट मेकिंग'' कोर्स में प्रशिक्षण के लिए अपनी रूचि जाहिर की, जिसके अनुसार ''हॉफ पेंट मेकिंग'' कोर्स में प्रशिक्षण देने के लिए लाईवलीहुड कॉलेज कांकेर के द्वारा आजीविका विकास कार्यक्रम के तहत् स्थानीय स्तर पर ही बालक आश्रम भवन ग्राम पानीडोबीर कोयलीबेड़ा को प्रशिक्षण केन्द्र बनाकर प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। कौशल प्रशिक्षण के साथ ही साथ युवाओं को निःशुल्क सिलाई किट और स्टेशनरी भी प्रदाय की गई। सहायक परियोजना अधिकारी ने बताया कि जिले के ग्राम पानीडोबीर में कौशल प्रशिक्षण का यह पहला आयोजन था।

ड्यूटी के दौरान शिक्षक नशे की हालत में हो तो अधिकारी तत्काल कार्यवाही करें - कलेक्टर

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। जिले के शासकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के अनुशासन के संबंध में कलेक्टर धर्मेश साहू ने जिला शिक्षा अधिकारी और सभी विकासखंड शिक्षा अधिकारी को पत्र जारी किया है। पत्र में उन्होंने कहा है कि शाला अवधि में शराब या अन्य नशीली पदार्थ का सेवन कर विद्यालय में पाए जाने पर एक शिक्षक को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है। शिक्षक का यह कृत्य खेदजनक एवं गंभीर प्रवृत्ति का है। शिक्षक यदि शराब के नशे पर या किसी भी प्रकार का नशीली पदार्थ का सेवन कर विद्यालय में आते हैं तो छात्र-छात्राओं के अध्यापन एवं उनकी मानसिकता प्रभावित होती है जो खेदजनक है। समस्त विकासखंड शिक्षा अधिकारी, समस्त सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी, बीआरसी, संकुल समन्वयक, प्राचार्य, प्रधान पाठक का यह दायित्व है कि प्रत्येक शिक्षक को सिविल सेवा आचरण नियम के तहत कड़ाई से पालन कराएं। यदि निरीक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा मादक पदार्थ का सेवन कराया करना पाया जाता है तो ऐसी स्थिति में उनके खिलाफ तत्काल कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई करना सुनिश्चित करें तथा की गई कार्रवाई की प्रति कलेक्टर कार्यालय को उपलब्ध कराएं। कलेक्टर ने अधिकारियों को स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यदि संबंधित अधिकारियों के द्वारा स्कूलों का औचक निरीक्षण नहीं किया जाता है और संबंधित के विरुद्ध कार्यवाही नहीं किए जाने पर उसकी जवाबदारी संबंधित नियंत्रण अधिकारियों पर होगी।

संस्कार में बारात जाने की परंपरा भगवान शिव व माता पार्वती के विवाह से हुई प्रारम्भ : रंजना साहू

धमतरी(विश्व परिवार)। श्रावण मास के पावन अवसर पर इतवारी बाजार में विराजमान बुढ़ेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में आयोजित शिव महापुराण कथा में भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू शामिल हुई, कथा श्रवण करने के उपरांत बुढ़ेश्वर महादेव में जल अर्पित कर पूजा अर्चना किए। प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी श्रावन मास के उपलक्ष्य में शिव महापुराण कथा का आयोजन कांवरिया बोल बम संघ व महिला समूह की अगुवाई में कथावाचक आचार्य पंडित श्री हरिशरण वैष्णव जी के मुखारविंद से सुनाई जा रही है जिसको श्रोता श्रद्धालु जन भगवान शिव की कथा का

परम आनंद व सेवा भक्ति से समर्पित होकर रसपान कर रहे हैं, कथावाचक श्री वैष्णव जी ने देवाधीदेव महादेव भगवान भोलेनाथ की कथा में शिव पार्वती विवाह का कथा सुनाएं। सर्वप्रथम पूर्व विधायक रंजना साहू, भाजयुमो जिला महामंत्री जय हिंदूजा, भाजपा नेत्री सीमा चौबे व्यास पीठ की पूजा अर्चना कर कथा रसपान किए। तत्पश्चात इतवारी बाजार में विराजमान बुद्धेश्वर महादेव को जल अर्पित श्रीमती साहू ने पूजा अर्चना किए। श्रीमती साहू ने कथा रसपान करते हुए उपस्थित श्रद्धालु भक्तजनों को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान भोलेनाथ शंकर जी और माता पार्वती के विवाह के समय भगवान भोलेनाथ के बारात में देव दानव मनुष्य सहित सभी गए थे, और उसी दिन से हमारे संस्कार के विवाह संस्कार में बारात जाने की परंपरा बनी जो परंपरा आज भी विद्यमान है।

बच्चों की बेहतर भविष्य के लिए पालकों का सकारात्मक सुझाव जरूरी: कलेक्टर

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विजय दयाराम के. ने कहा कि बच्चों की बेहतर भविष्य के लिए पालकों का सकारात्मक सुझाव जरूरी है। यह सुझाव बच्चों की गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने, बच्चों के बौद्धिक क्षमता बढ़ाने में सहायक होंगे। मुख्यमंत्री के मंशानुसार पालक-शिक्षक मेगा बैठक के आयोजन से शिक्षकों द्वारा पढ़ाई के स्तर, बच्चों की प्रगति का भी आंकलन किया जाना है। मंगलवार को कलेक्टर पालक-शिक्षक मेगा बैठक का निरीक्षण करने निकले थे उन्होंने दरभा,तोकापाल,बास्तानार, लोहंडीगुड़ा और जगदलपुर विकासखंड के स्कूलों का जायजा लिया, जिसमें डेंगा आमापारा, कोड़ेनार, किलेपाल, मिचनार, छापर भानपुरी और धरमपुरा के प्राथमिक और माध्यमिक शाला, आश्रम-छात्रावास तथा आत्मानंद स्कूल में आयोजित पालक-शिक्षक मेगा बैठक का जायजा लिया। राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले के सभी प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूलों में पालकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने और उन्हें बच्चों की प्रगति से अवगत कराने तथा बच्चों में भविष्य की सम्भावनाओं का आंकलन कर पालकों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए संयुक्त रूप से परिणामोन्मुखी प्रयास करने हेतु कलेक्टर विजय के मार्गदर्शन में मंगलवार को जिले के सभी 266 संकुलों में सुबह 11 बजे से दोपहर 02 बजे तक पालक-शिक्षक मेगा बैठक का आयोजन किया गया। निरीक्षण के अवसर पर जिला पंचायत सीईओ प्रकाश सर्वे भी उपस्थित थे। संकुल स्तर पर आयोजित कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पादित करने के लिए जिला स्तरीय सभी अधिकारियों को संकुल की मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी दी गई थी। इसके अंतर्गत अपर कलेक्टर, जिला कार्यालय में पदस्थ संयुक्त कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर, सभी राजस्व अनुविभागीय अधिकारियों सहित अन्य विभागों के सभी अधिकारी कुल 266 संकुलों में मेगा पालक-शिक्षक बैठक में शामिल हुए। जिले के सभी अधिकारियों को संबंधित संकुल केन्द्रों का निरीक्षण कर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्रतिवेदन करने के निर्देश दिए गए थे,जिसके अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में यह समन्वित पहल किया गया। इस पालक-शिक्षक मेगा बैठक में पालकों के साथ नई शिक्षा नीति 2020 के साथ ही नवाचारी प्रयासों पर गहन चर्चा की गई। जिसके तहत बच्चों की पढ़ाई के लिए उचित वातावरण हेतु घर में ही पढ़ाई हेतु एक निश्चित स्थान तय करने, पालकों को अपने बच्चों की दिनचर्या सुनिश्चित करने हेतु प्रेरित करने,बच्चों के सीखने की जानकारी लेने, बच्चों में सार्वजनिक रूप से अपने विचारों को व्यक्त करने और उनके संकोच को दूर करने पहल, बच्चों की अकादिमक प्रगति एवं परीक्षा, पुस्तक की उपलब्धता सुनिश्चित करने, बस्ता रहित शनिवार की गतिविधियों के सम्बंध में अवगत करवाने, विद्यार्थियों के आयु एवं कक्षा अनुरूप परीक्षण व पोषण की जानकारी देने और जाति,आय एवं निवास प्रमाण पत्र आदि बनाने हेतु शिविर के बारे में अभिभावकों को अवगत कराने, न्योता भोज की अवधारणा की जानकारी देने, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं सहित छात्रवृत्ति एवं विभागीय योजनाओं की जानकारी और विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्म दीक्षा एप तथा ई-जादुई पिटारा एप के माध्यम से शिक्षा के लिए पालकों एवं छात्रों को अवगत कराने सम्बन्धी बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की गई।

व्यापार समाचार

सैमसंग 'सॉल्व फॉर टुमॉरो' 2022 की विजेता टीम स्पुतनिक ब्रेन ने पेरिस 2024 के लिए 'टुगेदर फॉर टुमॉरो, इनेबलिंग पीपल' डिजिटल ओलंपिक कम्युनिटी में किया भारत का प्रतिनिधित्व

गुरुग्राम: सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स, दुनिया भर में ओलंपिक और पैरालंपिक गेम्सव के स्मार्टफोन पार्टनर, ने ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों के प्रशंसकों सहित अनेक लोगों के लिए टुगेदर फॉर टुमॉरो, इनेबलिंग पीपल नामक एक नई डिजिटल कम्युनिटी लॉन्च करने और उसे बढ़ावा देने के लिए 31 जुलाई को पेरिस में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के साथ मिलकर एक कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम पेरिस 2024 को समर्पित पेरिस के बहुउद्देश्यीय प्रदर्शनी स्थल SPOT24 में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आईओसी के प्रेसिडेंट थॉमस बाक, आईओसी के टेलीविजन और मार्केटिंग सेवाओं के एमडी ऐनी-सोफी वोमार्ड, पैरालंपिक समिति (आईपीसी) के प्रेसिडेंट एंड्रयू पार्सन्स, सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रेसिडेंट और ग्लोबल मार्केटिंग ऑफिस के हेड वायएच ली, सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स यूरोप ऑफिस के प्रेसिडेंट इल-क्यूंग सुंग और पूर्व स्वर्ण पदक विजेता फ्रांसीसी हैंडबॉल खिलाड़ी और निपुण विजुअल ऑर्टिस्ट और पेरिस 2024 के लिए ओलंपिक संग्रहालय के नेतृत्व में ओलंपियन कलाकार कार्यक्रम के प्रतिभागी ल्यूक अबालो ने भाग लिया। कोरियाई टीम के पूर्व वॉलीबॉल खिलाड़ी, येओन कोंग किम, टीम जीबी स्केटबोर्डर एंडी मैकडोनाल्ड, ऑस्ट्रेलियाई पैरा-एथलीट मैडिसन डी रोजारियो और यूके कंटेंट क्रिएटर और रैपिंग साइंस टीचर, मैट ग्रीन ग्लोबल एम्बेस्डर के रूप में इस प्रोजेक्ट में भाग लेने जा रहे हैं। ये सोशल मीडिया के जरिए टुगेदर फॉर टुमॉरो, इनेबलिंग पीपल के लिए सक्रिय रूप से कंटेंट साझा करेंगे। टुगेदर फॉर टुमॉरो, इनेबलिंग पीपल प्रोजेक्ट सैमसंग और आईओसी द्वारा दुनिया भर के ओलंपिक और पैरालंपिक प्रशंसकों को ओलंपिक आंदोलन में भाग लेने और उससे जुड़ने में मदद करने के लिए विकसित किया गया है।

शोभितम ने किया इसाडोरालाइफ का अधिग्रहण, रेडी-टू-वियर साड़ी बाजार में सबसे बड़ा खिलाड़ी; साड़ी को वैश्विक बनाने का लक्ष्य!

बेंगलुरु: डी2सी एथनिक फैशन में वैश्विक अग्रणी और उद्योग में सबसे तेजी से बढ़ते ब्रांडों में से एक, शोभितम ने रेडी-टू-वियर साड़ी बाजार में अग्रणी और इस क्षेत्र में सबसे बड़े ब्रांड इसाडोरालाइफ के रणनीतिक अधिग्रहण की घोषणा की है- जिसका लक्ष्य भारत की साड़ियों को जेन जेड और वैश्विक स्तर पर सभी के लिए सुलभ बनाना है! शोभितम और इसाडोरालाइफ ने दुनिया भर में सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले पारंपरिक भारतीय परिधान - साड़ी की पहुंच और आकर्षण को बढ़ाने के लिए हाथ मिलाया है! इस साझेदारी का उद्देश्य ड्रेपिंग से अपरिचितता की चुनौतियों का समाधान करना और दुनिया भर में विशेष रूप से युवा उपभोक्ताओं के बड़े जनसांख्यिकीय आधार तक पहुंच बनाना है, जिससे भारत और वैश्विक स्तर पर लोगों की अलमारी में साड़ियों को एक संपूर्ण जरूरी परिधान के रूप में प्रदर्शित किया जा सके। यह रणनीतिक अधिग्रहण दो महिलाओं के नेतृत्व वाली स्टार्टअप्स को एक साथ लाता है, जहां एथनिक फैशन के लिए उनका गहरा जुनून दो अद्भुत उद्यमियों को एकजुट करता है - अपर्णा त्यागराजन (शोभितम की सह-संस्थापक) जिनके पास माइक्रोसॉफ्ट से गहरी आईटी पृष्ठभूमि है, और नेहा टंडन शर्मा, (इसाडोरालाइफ की संस्थापक), 10 वर्षों की अनुभवी निवेश बैंकर, जो भारत और वैश्विक बाजारों में एक साथ साड़ी उद्योग में क्रांति लाएगी। और यह विस्तार और विकास के लिए रेडी-टू-वियर साड़ी बाजार में और अधिक नवाचार के उद्देश्य से महत्वपूर्ण निवेश की शुरुआत का प्रतीक है।

कोरोमंडल इंटरनेशनल ने एस शंकरसुब्रमण्यन को एमडी और सीईओ के रूप में पदोन्नत किया

रायपुर: कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड (सीआईएल) के निदेशक मंडल ने न्यूट्रिएंट बिजनेस के कार्यकारी निदेशक श्री एस शंकरसुब्रमण्यन को 7 अगस्त 2024 से कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के रूप में नियुक्त किया। श्री शंकरसुब्रमण्यम के पास प्रचुर अनुभव है और एक मुख्य वित्तीय अधिकारी और एक व्यवसाय प्रमुख के रूप में उनका एक बेहतर ट्रैक रिकॉर्ड है। वह मद्रास विश्वविद्यालय से गणित में स्नातक हैं, और इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एंड मैनेजमेंट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के सदस्य हैं। उन्होंने वर्ष 2009 में हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम (एएमपी) पूरा किया है। मुरुगप्पा समूह के साथ उनका जुड़ाव वर्ष 1993 से है। उन्होंने कॉर्पोरेट फाइनेंस में ई.आई.डी. पैरी (इंडिया) लिमिटेड में अपना करियर शुरू किया, जहां उन्होंने 2003 में कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड में शामिल होने से पहले विभिन्न भूमिकाओं में प्रगति की।

सरस्वती साड़ी डिपो लिमिटेड का आईपीओ 12 अगस्त, 2024 को खुलेगा

रायपुर: सरस्वती साड़ी डिपो लिमिटेड का प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम 12 अगस्त, 2024 को खुलेगा। इक्विटी शेयरों (प्रत्येक अंकित मूल्य ? 10) के कुल ऑफर साइज़ में 6,499,800 इक्विटी शेयरों तक का नया इश्यू और 3,501,000 इक्विटी शेयरों तक का ऑफर फॉर सेल शामिल है। आईपीओ में शेयरों का प्राइस बैंड 152 से 160 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 90 इक्विटी शेयरों और उसके बाद 90 इक्विटी शेयरों के गुणकों में बोलियाँ लगाई जा सकती हैं। कंपनी ने नए निर्गम से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने के लिए करने का प्रस्ताव किया है, जिसका अनुमान वित्त वर्ष 2025 के लिए ? 81 करोड़ लगाया गया है। शेष राशि सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए खर्च की जाएगी। 10 अंकित मूल्य के 3,501,000 इक्विटी शेयरों के ऑफर फॉर सेल में तेजस दुल्हानी द्वारा 700,200 इक्विटी शेयर, अमर दुल्हानी द्वारा 700,200 इक्विटी शेयर, शेवक्रम दुल्हानी द्वारा 700,200 इक्विटी शेयर, सुजानदास दुल्हानी द्वारा 700,200 इक्विटी शेयर।

एसए20 में पार्ल रॉयल्स के लिए खेलेंगे दिनेश कार्तिक

नई दिल्ली(एजेंसी)। एसए20 टूर्नामेंट के लीग एम्बेसडर घोषित किए जाने के एक दिन बाद पूर्व भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज दिनेश कार्तिक पार्ल रॉयल्स का प्रतिनिधित्व करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। वह टूर्नामेंट के तीसरे सीजन में खेलने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी होंगे। इस मामले से जुड़े सूत्रों ने बताया कि कार्तिक एसए20 सीजन 3 के लिए विदेशी खिलाड़ी के रूप में पार्ल रॉयल्स के साथ जुड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, जिससे वह दक्षिण अफ्रीका स्थित टी20 फ्रेंचाइजी लीग में खेलने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन जाएंगे। 39 वर्षीय पूर्व विकेटकीपर-बल्लेबाज के पास फ्रेंचाइजी टी20 क्रिकेट की गहरी समझ है, क्योंकि वह 2008 में इंडियन प्रीमियर लीग की शुरुआत से ही इसका हिस्सा रहे हैं। उन्होंने अपने 16 साल के आईपीएल करियर में छह टीमों का प्रतिनिधित्व किया है। इस दौरान, कार्तिक ने 26.32 की औसत और 135.66 के स्ट्राइक रेट से 4842 रन बनाए। उन्होंने विकेट के पीछे 145 कैच पकड़े और 37 स्टंपिंग की। कार्तिक ने भारत के लिए 26 टेस्ट, 94 वनडे और 60 टी20 मैच खेले हैं। वो 2007 में पहला पुरुष टी20 विश्व कप और 2013 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली टीम इंडिया के सदस्य थे। कार्तिक ने अंतरराष्ट्रीय और आईपीएल में अपने लंबे करियर से संन्यास ले लिया है, जहां वह 2008 में अपनी शुरुआत से ही नियमित रूप से आईपीएल में खेलते रहे। कार्तिक को उनकी आईपीएल टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने मेंटॉर-कम-बैटिंग कोच के रूप में शामिल किया। आईपीएल में, उन्होंने कोलकाता नाइट राइडर्स की कप्तानी करने सहित छह टीमों के लिए खेला। बता दें, केवल सेवानिवृत्त भारतीय खिलाड़ियों को ही विदेशी टी20 लीग में खेलने की अनुमति है। पिछले साल, रॉबिन उथप्पा और यूसुफ पठान यूएई के आईएलटी20 में दुबई कैपिटल्स के लिए खेले थे, जबकि अंबाती रायडू ने कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) में सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स का प्रतिनिधित्व किया था। इस महीने की शुरुआत में एसए20 सीजन दो में प्लेऑफ में पहुंचने वाली पार्ल रॉयल्स ने कप्तान डेविड मिलर, तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी, ऑलराउंडर ब्योर्न फोर्टुइन और ऐंडिल फेहलुकवायो सहित दस खिलाड़ियों को बरकरार रखा, जबकि जोबर्ग सुपर किंग्स से दयान गलीम को ट्रेड किया।

झाय रिचर्डसन टॉप एंड टी20 टूर्नामेंट में पर्थ स्कॉर्चर्स के लिए खेलेंगे

पर्थ(एजेंसी)। लंबे समय से चोटों से परेशान आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज झाय रिचर्डसन प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी के लिए तैयार हैं। उन्हें डार्विन में होने वाले आगामी टॉप एंड टी20 टूर्नामेंट के लिए पर्थ स्कॉर्चर्स टीम में शामिल किया गया है। बिग बैश लीग (बीबीएल) के दौरान चोट लगने के कारण मैदान से बाहर रहने वाले रिचर्डसन का ऑस्ट्रेलियाई धरती पर खेलने का जनवरी के बाद ये पहला मौका होगा। रिचर्डसन का स्कॉर्चर्स की टीम में शामिल होना एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि वह घरेलू क्रिकेट से काफी हद तक दूर रहे हैं। इस तेज गेंदबाज को हाल ही में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया का कॉन्ट्रैक्ट मिला है और वह अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में बाधा डालने वाली चोटों के बाद पूरी तरह से फिट होने की दिशा में मेहनत कर रहे हैं। रिचर्डसन ने प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में आखिरी बार इस साल की शुरुआत में आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स के साथ खेला था। वह ब्रिसबेन में ऑस्ट्रेलियाई प्रशिक्षण शिविर का भी हिस्सा रहे हैं। टॉप एंड टी-20 टूर्नामेंट, जिसमें नॉर्थन टेरिटरी स्ट्राइक, पाकिस्तान ए, एसीटी, मेलबर्न रेनेगेड्स, मेलबर्न स्टार्स और बांग्लादेश हाई-परफॉरमेंस टीम सहित स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय टीमें भाग ले रही हैं। ये टूर्नामेंट रिचर्डसन को मैच फिटनेस हासिल करने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगा। उनके साथ तेज गेंदबाज मैट केली भी होंगे, जो चोट के कारण पिछले सीजन टूर्नामेंट के आखिरी भाग का हिस्सा नहीं थे।

कोहली के निशाने पर सचिन तेंदुलकर का सबसे बड़ा रिकॉर्ड, तीसरे वनडे में रचेंगे नया इतिहास

नईदिल्ली(एजेंसी)। पूर्व भारतीय कप्तान विराट कोहली के लिए श्रीलंका वनडे सीरीज कुछ खास नहीं रही है. उन्होंने 2 मैच खेले हैं और दोनों ही मैचों में वह बड़ी पारी खेलने में नाकामयाब रहे. ऐसे में अब तीसरे वनडे मैच में विराट कोहली से एक बड़ी पारी की उम्मीद रहेगी. वहीं, यदि कोहली इस मैच में 78 रन बना लेते हैं, तो मास्टर-ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर के साथ एक स्पेशल क्लब में शामिल हो जाएंगे. श्रीलंका के साथ खेले जाने वाले तीसरे वनडे मैच में अगर विराट कोहली बड़ी पारी खेलते हैं, तो वह 50 ओवर फॉर्मेट में 14000 रन पूरे कर लेंगे. कोहली को 114 रन की दरकार हैं और वनडे में इतने रन बनाते ही वह महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर और कुमार संगकारा को पीछे छोड़ देंगे. आपको बता दें, सचिन तेंदुलकर और कुमार संगाकारा ने क्रमशः 350 और 378 पारियाों में 14 हजार रन बनाए हैं. अब अगर कोहली 114 रन (282 पारी) बना लेते हैं, तो वह वनडे क्रिकेट में सबसे तेज 14000 रन बनाने वाले प्लेयर बन जाएंगे. भारत और श्रीलंका के बीच तीसरा वनडे मैच आर.प्रेमदासा स्टेडियम में खेला जाएगा. जहां, एक बार फिर सभी की नजरें कोहली पर होंगी. विराट ने श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में 24 और दूसरे वनडे में 14 रन बनाए. अब तीसरा मुकाबला 7 अगस्त को खेला जाएगा, जिसमें विराट से बड़ी पारी की उम्मीद रहेगी. यदि इस मैच में विराट 78 रन बना लेते हैं, तो वह इंटरनेशनल क्रिकेट में अपने 27000 रन पूरे कर लेंगे. इंटरनेशनल क्रिकेट में अब तक ये कारनामा सिर्फ 3 ही क्रिकेटर कर सकें हैं, जिसमें भारत की तरफ से सचिन तेंदुलकर, श्रीलंका के कुमार संगकारा और ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग का नाम शामिल हैं.

रैलिस इंडिया ने रायपुर में लॉन्च किया पानी में घुलनशील उर्वरक एक्काफर्ट फर्टिगेशन टमाटर

रायपुर- टाटा एंटरप्राइज़ और भारतीय कृषि-इनपुट उद्योग में एक अग्रणी कंपनी रैलिस इंडिया लिमिटेड ने आज रायपुर, छत्तीसगढ़ में टमाटर की फसलों की उपज में उल्लेखनीय वृद्धि करने के लिए तैयार एक नया, पानी में घुलनशील उर्वरक एक्काफर्ट फर्टिगेशन टमाटर लॉन्च किया। रैलिस इंडिया ने रिसर्च और डेवलपमेंट संबंधी अपने बेहतरीन प्रयासों के माध्यम से, टिकाऊ और व्यापक फसल पोषण समाधान विकसित किए हैं, जिनका समापन एक्काफर्ट फर्टिगेशन टमाटर में हुआ है। यह इनोवेटिव प्रॉडक्ट टमाटर के फसल की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करेगा 7, जिससे अधिक उपज और बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद मिलते हैं। टमाटर दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण सब्जी फसल है, जो ताजा खपत और केचप, सॉस और पेस्ट जैसे उत्पादों में प्रोसेसिंग दोनों के लिए आवश्यक है। ग्लोबल स्तर पर भारत टमाटर का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और इस नाते, इस फसल की गुणवत्ता और शेल्फलाइफ को बढ़ाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

एमओएस यूटिलिटी लिमिटेड के निदेशक मंडल ने सौर व्यवसाय में प्रवेश कि दी मंजूरी

रायपुर। एमओएस यूटिलिटी लिमिटेड (हृस्श्व स्ल्हस्) एक प्रमुख फिनटेक कंपनी है, जो व्यवसायों और व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की फिनटेक और यूटिलिटी भुगतान समाधान सेवाएं देती है। कंपनी ने हाल ही में घोषणा की है कि बोर्ड ने कंपनी के संस्थापन पत्र के उद्देश्य वाक्य में बदलाव किया है। कंपनी ने अपने मुख्य उद्देश्यों में कुछ नई व्यावसायिक गतिविधियों को जोड़ा है, जिसमें भारत या विदेश में सभी प्रकार के - सौर पीबी मॉड्यूल, सेल, बैटरी और ऊर्जा भंडारण उपकरणों का निर्माण और व्यापार, सौर ऊर्जा से संबंधित उपकरणों और उत्पादों का आयात और निर्यात, सौर पैनल, चार्जर, पावर पैक व अन्य संबंधित उत्पादों का व्यापार और सौर ऊर्जा से जुड़े सभी व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल होना है। हाल ही में कंपनी ने घोषणा की है कि कंपनी की सहायक कंपनी एमओएस लॉगकनेक्ट प्राइवेट लिमिटेड को इंडिया पोस्ट से मास्टर फ्रेंचाइजी लाइसेंस प्राप्त हुआ है, जिससे वे भारत भर में डाक सेवाएं प्रदान कर सकेंगे। इस साझेदारी से कंपनी को अपनी सेवाओं का विस्तार करने और ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने में मदद मिलेगी। कंपनी का उद्देश्य ग्राहकों को सुगम और कुशल सेवाएं प्रदान करना है। भारत पोस्ट फ्रेंचाइजी मॉड्यूल के माध्यम से कंपनी द्वारा डाक सेवाएं, पार्सल सेवाएं, मनी ऑर्डर सेवाएं, बिल पेमेंट सेवाएं और अन्य डाक सेवाएं प्रदान की जाएगी। इस साझेदारी के माध्यम से, हम भारत पोस्ट के व्यापक नेटवर्क का उपयोग करके देशभर में सेवाएं प्रदान कर सकते है, संसाधनों का लाभ उठाकर सेवाओं को और भी कुशल बना सकते हैं, निर्वाध और कुशल सेवा वितरण के लिए तकनीक और बुनियादी ढांचे का उपयोग कर सकते हैं। हमारी टीम का लक्ष्य ग्राहकों को सुगम और कुशल सेवाएं प्रदान करना, उनकी आवश्यकताओं को समझना और उन्हें पूरा करना है। एमओएस यूटिलिटी लिमिटेड एक अग्रणी फिनटेक कंपनियों में से एक है, जो व्यवसायों और व्यक्तिगत तौर पर विभिन्न फिनटेक और पुटिलिटी पेमेंट सॉल्यूशन सर्विस देती है।

भारतीय जन उपभोक्ताओं के बीच बढ़ रही है ई-कॉमर्स अपनाने की चाहत, बार-बार खरीदारी करने वाले उपभोक्ता के रूप में उभरे हैं टियर 4 प्लस उपयोगकर्ता : मीशो स्मार्ट शॉपर रिपोर्ट

रायपुर: भारत के एकमात्र वास्तविक ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस मीशो ने अपनी स्मार्ट शॉपर रिपोर्ट का पहला संस्करण जारी किया, जिसमें 2024 के प्रथम छमाही में देश के गतिशील ऑनलाइन शॉपिंग रुझानों का व्यापक विश्लेषण पेश किया गया. यह रिपोर्ट बड़े पैमाने पर ग्राहकों की बदलती आदतों और पसंद का पता लगाती है, जो वर्तमान में ऑनलाइन खरीदारी करने वाली आबादी का उल्लेखनीय 80त्न हिस्सा बनाते हैं. पिछले 9 सालों में, मीशो ने देश भर में लाखों उपयोगकर्ताओं के लिए ई-कॉमर्स को सुलभ बनाया है. अपने 15 करोड़ वार्षिक लेन-देन करने वाले ग्राहकों में से 80त्न टियर 2 और उससे आगे के शहरों से आते हैं, मीशो नए-नए ई-कॉमर्स उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन लाने में सहायक रहा है. यह प्लेटफॉर्म ई-कॉमर्स देश में सबसे बड़े जन उपभोक्ता आधारों में से एक है, जो भिलाई, इंफाल, जालंधर, झुंझुनू और नेल्लोर जैसे विभिन्न स्थानों में भी ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है.

कार्यालय प्रमुख अभियन्ता,
लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर, अटल नगर
(केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ) ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना
Main Portal: https: // eproc.cgstate.gov.in

निम्नलिखित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है :-

स.क्र.	सिस्टम निविदा क्रमांक/दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत (रुपये लाख में)
1	156914 द्वितीय आमंत्रण 31.07.2024	जांजगीर केरा शिवरीनारायण मार्ग के कि.मी. 2/2 से 3/4 =1.40 कि.मी. में चौड़ीकरण का कार्य।	285.56
2	157026 प्रथम आमंत्रण 01.08.2024	जिला सूरजपुर के प्रतापपुर में नवीन व्यवहार न्यायालय भवन का निर्माण कार्य।	700.44
3	157043 छटवां आमंत्रण 01.08.2024	जिला सुकमा में 02 नवीन व्यवहार न्यायालय भवन का निर्माण , पुलिस बूथ, ब्लॉक मेडिकल, बैक ब्लॉक, मालखाना स्टोर, लॉकअप, कैंटीन पब्लिक ब्लॉक, एडवोकेट ब्लॉक का निर्माण एवं पहुंच मार्ग लंबाई 590 मीटर एवं विद्युतीकरण कार्य सहित।	656.98

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि सं.क. 01 दिनांक 20.08.2024 ,सं.क. 02 दिनांक 23.08.2024, सं. क. 03 दिनांक 13.08.2024 निर्धारित है। निविदा में भाग लेने की प्रक्रिया एवं निविदा के संबंध में विस्तृत जानकारी विभाग के उपरोक्त वेबसाईट में देखे जा सकते है।

G-242501681/3

मुख्य अभियंता
केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रमुख अभियंता,
लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर अटल नगर

कार्यालय कार्यपालन अभियंता,
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग कोण्डागांव जिला-कोण्डागांव (छत्तीसगढ़)
Email - ID : ee-res.kondagaon@nic.in, Fax & Ph. No.-07786-242243

मैनुअल पद्धति वर्ष 2024-25 हेतु सूचना क्रमांक - 11 (तृतीय दौर)

जोनल निविदा आमंत्रण

कमांक/ 11 /व.ले.लि./नि.प्र./ग्रा.यां.सेवा/2024-25 कोण्डागांव, दिनांक 05/08/2024

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत 'डी' एवं उच्च श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु मैनुअल जोनल निविदा आमंत्रित की जाती है सभी कार्यों की जोनल निविदा प्रपत्र कार्यालय में जमा करने की **अंतिम तिथि 12.08.2024 शाम 5.00 बजे** तक।

क्र.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रूपये लाख में)
1	2	3
1	रू. 10.00 लाख से कम लागत के विभिन्न निर्माण भवन/मंच/पुलिया/बाउंड्रीवाल/नाली/सड़क एवं अन्य प्रकार के निर्माण कार्य -	
	वि.ख. कोण्डागांव	35.00
	वि.ख. माकड़ी	35.00
	वि.ख. फरसगांव	35.00
	वि.ख. केशकाल	35.00
	वि.ख. बड़ेराजपुर	35.00

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाइट http://res.cg.gov.in दिनांक **06.08.2024** से देखी एवं डाऊनलोड की जा सकती है।

G-242501642/1

कार्यपालन अभियंता,
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा
संभाग-कोण्डागांव

संक्षिप्त समाचार

नियामक आयोग ने विद्युत कंपनी मुख्यालय में स्मार्ट मीटरिंग का प्रस्तुतिकरण देखा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग द्वारा आज छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी मुख्यालय में स्मार्ट मीटरिंग की कार्यप्रणाली एवं प्रगति से संबंधित प्रस्तुतिकरण का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर आयोग के अध्यक्ष हेमंत वर्मा ने कहा कि स्मार्ट मीटर लगाने के साथ ही उपभोक्ताओं को भी स्मार्ट बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इस प्रणाली से प्राप्त होने वाले आंकड़ों का उपयोग वितरण कंपनी की कार्यप्रणाली में सुधार के लिए किया जा सकता है। विद्युत सेवाभवन मे प्रबंध निदेशकगण भीमसिंह कंवर, एस.के. कटियार, राजेश कुमार शुक्ला सहित कार्यपालक निदेशक, मुख्य अभियंताओं व अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में अतिरिक्त मुख्य अभियंता (प्रोजेक्ट) श्री अब्राहम वर्गीज ने पॉवर पाइंट के माध्यम से प्रस्तुतिकरण दिया। इस अवसर पर टाटा पॉवर और जीनस कंपनी के अधिकारी भी उपस्थित थे। प्रदेश में घरेलू उपभोक्ताओं के परिसरों में स्मार्ट मीटर लगाने का कार्य शुरू किया गया है। आयोग को बताया गया कि जिन परिसरों में स्मार्ट मीटर लगाया गया है उसकी निरंतर समीक्षा की जा रही है। स्मार्ट मीटर की रीडिंग सटीक और वास्तविक है। पुराने मीटरों की रीडिंग व स्मार्ट मीटर की रीडिंग में मान्य सीमा के अंदर ही विचलन पाया गया जो 0.1 प्रतिशत से कम है। इस अवसर पर श्री हेमंत वर्मा ने कहा कि यह योजना आधुनिक तकनीकी पर आधारित है जिसके सही उपयोग से उपभोक्ता को अपने घर की बिजली खपत की जानकारी, बिजली उपभोग की ट्रैकिंग, उपभोग की वास्तविक जानकारी व नियंत्रण करने का अधिकार मिलेगा। यह योजना संपूर्ण रूप से उपभोक्ता हित में बनाई गई है। उन्होंने इस योजना के प्रति संतुष्टि जाहिर की और पॉवर कंपनी, टाटा पॉवर और जीनस कंपनी को शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में नियामक आयोग के सचिव श्री सूर्यप्रकाश शुक्ला, निदेशकगण सुरेंद्र सिंह, सुरोबिन रॉय सहित पॉवर कंपनी के कार्यपालक निदेशक आर.ए. पाठक, वी.के. साय, श्रीमती ज्योति नन्नौरे एवं मुख्य अभियंता राजेंद्र प्रसाद उपस्थित थे।

भारतीय डाक विभाग ने रक्षाबंधन पर्व के लिए की विशेष व्यवस्था

रायपुर (विश्व परिवार)। आगामी रक्षाबंधन पर्व को ध्यान में रखते हुए भारतीय डाक विभाग द्वारा ग्राहकों के लिए विशेष व्यवस्थाएं की जा रही हैं । इस व्यवस्था के तहत विशेष राखी लिफाफा का प्रकाशन कराया गया ताकि इस लिफाफे का उपयोग कर राखियों को शीघ्रता से स्पीड-पोस्ट के माध्यम से प्रेषित किया जा सके । यह विशेष लिफाफा रायपुर प्रधान डाक घर सहित रायपुर संभाग के सभी डाकघरों में उपलब्ध कराया गया है । इसके अलावा राखी प्रेषण के लिए पुजारी पार्क के सामने, टिकरापारा, रायपुर स्थित नेशनल सार्टिंग हब में चौबीसों घंटे एवं प्रधान डाकघर में सुबह 08.00 बजे से रात्रि 08.00 बजे तक और शहर एवं अन्य डाकघरों में स्पीड-पोस्ट बुकिंग की सुविधा उपलब्ध करायी गई है । अत्यधिक मात्रा में स्पीड-पोस्ट, रजिस्टर्ड पोस्ट, पार्सल बुकिंग के लिए रेलवे स्टेशन चौक के पास, गंज डाकघर परिसर में स्थित बल्क प्रोसेसिंग सेंटर में बुकिंग सुविधा उपलब्ध कराई गयी है, जहां बल्क में राखियां प्रेषित की जा सकती हैं । इस अवसर पर राखियां प्रेषित करने के लिए विशेष रूप से पीले रंग की पेटियां लगायी हैं ताकि बहनों की राखियां भाईयों तक शीघ्रता से पहुंचाई जा सके ।

पैरामेडिकल में श्री रावतपुरा विविद्यालय विद्यार्थियों का अब छत्तीसगढ़ पैरामेडिकल काउंसिल में हो सकेगा पंजीयन

रायपुर (विश्व परिवार)। हाईकोर्ट बिलासपुर से ऑप्टोमेट्री एवं एम. एल .टी. के विद्यार्थियों को मिली बड़ी राहत, अब पा सकेंगे शासकीय नौकरी चिकित्सा क्षेत्र में पैरामेडिकल विज्ञान के दक्ष विशेषज्ञों की महती आवश्यकता है। राज्य में विभिन्न शासकीय एवं गैर शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय तथा चिकित्सालयों की सफलता निदान प्रक्रिया पर निर्भर करता है। पैरामेडिकल स्टाफ की दक्षता से चिकित्सक रोगी की बीमारी पर सही उपचार को अंतिम रूप देते हैं।

श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी में ऑप्टोमेट्री (आंख की जांच) हेतु स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम एवं बी.एस.सी. एम.एल.टी. के पाठ्यक्रम संचालित हैं। यूनिवर्सिटी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों का पैरामेडिकल काउंसिल में पंजीयन नहीं किया जा रहा था7 जिस कारण ये विद्यार्थी छत्तीसगढ़ शासन के शासकीय नौकरी से वंचित हो रहे थे7 इस पर व्यथित होकर उत्तीर्ण विद्यार्थियों द्वारा उच्च न्यायालय बिलासपुर में प्रकरण में याचिका दायर की थी, जिसमें उच्च न्यायालय द्वारा सभी पक्षों की सुनवाई उपरांत निर्णय दिया गया। तथ्यों और उपरोक्त प्रस्तुत प्रस्तुतियों को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय को डिग्री प्रदान करने का अधिकार है और प्रतिवादी नंबर 2 छत्तीसगढ़ पैरामेडिकल काउंसिल तटस्थ उद्धरण 6 के नाम की प्रविष्टियों पर विचार करने और पंजीकृत करने का अधिकार है। पैरामेडिकल के चिकित्सक, विश्वविद्यालय ने याचिकाकर्ताओं को यूजीसी की धारा 22(1) के अनुसार डिग्री प्रदान की है। अधिनियम, 1956 और पैरामेडिकल काउंसिल ने याचिकाकर्ताओं के नाम पंजीकृत नहीं किए हैं। इस समय, प्रतिवादी नंबर 2 को इस निर्देश के साथ याचिका का निपटारा किया जाता है कि वह इस संबंध में प्रविष्टियां करके याचिकाकर्ताओं को परिषद के रजिस्टर में उनका नाम दर्ज करके पंजीकरण प्रदान करें। रजिस्टर में याचिकाकर्ताओं का नाम उचित समय तक रखा और बनाए रखा जाए। प्रतिवादी नंबर 2 को प्रैक्टिस का अपेक्षित प्रमाणपत्र जारी करने का भी निर्देश दिया जाता है। यदि यह पाया जाता है कि याचिकाकर्ताओं ने गलत तरीके से डिग्री प्राप्त की है, तो प्रतिवादी नंबर 2 अधिनियम, 2001 की धारा 40 के तहत याचिकाकर्ताओं की प्रविष्टियों पर रोक लगाने के लिए स्वतंत्र होगा।

उक्त निर्णय से श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी से उत्तीर्ण 500 से अधिक पैरामेडिकल विद्यार्थियों के पैरामेडिकल काउंसिल में पंजीयन का मार्ग खुल गया तथा उन्हे विधिवत रूप से कार्य करने हेतु आवश्यक प्रमाण पत्र भी प्राप्त हो जायेगा। जिससे वे विभिन्न छत्तीसगढ़ शासन एवं केंद्र शासन के शासकीय व अशासकीय चिकित्सा क्षेत्रों में रोजगार पा सकेंगे ।

उपरोक्त निर्णय उपरांत यूनिवर्सिटी द्वारा संचालित पैरामेडिकल स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्रशिक्षण हेतु प्रवेश के लिए विद्यार्थियों में उत्साह दिखा।

शंकर नगर में भरी बारिश में पेयजल संकट जिम्मेदार कौन ?

जोन क्रमांक 3 में जल समस्या पर नेताप्रतिपक्ष ने ली जल विभाग की बैठक

रायपुर विश्व परिवार। जोन क्रमांक 03 में जल समस्या पर नेताप्रतिपक्ष श्रीमती मीनल चौबे जी द्वारा जल विभाग की बैठक ली गयी। विगत दिनों शंकर नगर वार्ड 30 में जल की आपूर्ति लगातार प्रभावित होने पर पार्षद सुमन राम प्रजापति द्वारा इसकी जानकारी नेता प्रतिपक्ष को दी गई। जिसके पश्चात नेता प्रतिपक्ष श्रीमती चौबे जी द्वारा बैठक ली गयी एवं इस विषय मे जानकारी ली गयी।जिसमे यह पाया गया कि इस टंकी से पांच वार्डो को तो सप्लाई होती ही है साथ ही विधानसभा एवं वित्तीय लेखाकार भवन को भी सप्लाय यंही से होती है ,साथ ही साथ अमृत मिशन की टेस्टिंग हेतु जो जल बैरन बाजार टंकी से सप्लाय होना चाहिये वह भी लगभग 3 मीटर जल शंकर नगर की टंकी से ही हो रहा है।

नगर निगम में पानी की व्यवस्था देखने वालों तीनों विभाग से सवाल करनेपर तीनों विभागों ने एक दूसरे को ज़िम्मेदार बता दिया. ज़ोन तीन के अधिकारीयो ने अमृत मिशन पर ठीकरा फोड़ा और कहा कि बैरन बाज़ार की टंकी बन जाने के बावजूद टंकी से पानी सप्लाई नहीं किया जा रहा.

अमृत मिशन के अधिकारीयो का कहना है कि फ़िल्टर प्लांट से टंकी भर नहीं रही इसलिए टेस्टिंग नहीं हो पा रहा है.फ़िल्टर प्लांट के अधिकारीयो का कहना है कि चूँकि विधानसभा में भी शंकरनगर पानी टंकी से पानी जाता है अत: दिन मे 12 बजे तक पानी सप्लाई चलते रहने से टंकी भरने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता.

नेता प्रतिपक्ष ने तीनों अधिकारियों से बात कर समस्या का समाधान करने का कड़ाई से निर्देश दिया और व्यवस्था दुरुस्त करने का आदेश दिया।

इस बैठक में मुख्य रूप से जन प्रतिनिधि राम प्रजापति जी, जोन कमिश्नर जशदेव बॉम्बरा जी,जल विभाग इंजीनियर फारूकी जी, सहित कर्मचारी गण उपस्तिथ हुए।

प्रेस क्लब में सीपीआर डेमोस्ट्रेशन अवेयरनेस प्रोग्राम 9 को

रायपुर (विश्व परिवार)। जैसा की आप सबको विदित है कि पिछले कुछ समय से हार्ट अटैक के मामले लगातार हैं। आज किसी भी उम्र के व्यक्ति को हार्ट अटैक आ रहा है। बीते दिनों दिल्ली में एक बुजुर्ग को हार्ट अटैक आया तो मौके पर मौजूद महिला डॉक्टर ने सीपीआर देकर जान बचाई थी। यह वीडियो बहुत वायरल हुआ था। इस वीडियो से यह स्पष्ट है कि अगर हम सीपीआर देना जानते हैं तो व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है। इसे देखते हुए रायपुर प्रेस क्लब एवं कार्डियोलॉजी विभाग एडवांस कार्डियक इन्स्टीट्यूट, पंडित जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर के संयुक्त तत्वावधान दिनांक 9 अगस्त 2024 को दोपहर 12.00 से 3.00 बजे तक स्व. मधुकर खेर स्मृति भवन, मोतीबाग में *सीपीआर डेमोस्ट्रेशन अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन किया गया है।

भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा शिक्षकों हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

रायपुर विश्व परिवार। भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा श्मानकों के माध्यम से विज्ञान शिक्षण पर शिक्षकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन को होटल सैमरॉक ग्रीन्सक बॉय जारडीन रायपुर मे सफ्लतापूर्वक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राज्य के 20 जिलों के 56 विद्यालयों से 102 विज्ञान संकाय के शिक्षकों ने भाग लिया। भारतीय मानक ब्यूरो की पहल मानकों के माध्यम से विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य मानकों के माध्यम से छात्रों के बीच वैज्ञानिक ज्ञान और समझ को बढ़ावा देना है। इस पहल के तहत आम जीवन मे इस्तेमाल हेने वाली उत्पादों में प्रयुक्त विज्ञान के सिद्धांतों के लिए 52 पाठ योजनाओ को विकसित किया गया है। विज्ञान के शिक्षकों को इन पाठ योजनाओ पर प्रशिक्षित किया गया जिससे वह अपनी शिक्षण विधि में अनुप्रयोग कर सकें।

श्री दिब्येपन्दुत चक्रवर्ती वैज्ञानिक.जी एवं उपमहानिदेशक पूर्वी क्षेत्र भारतीय मानक ब्यूरो ने राष्ट्र में गुणवत्ता जागरूकता के लिए भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संचालित आउटरिच कार्यक्रमों जैसे की केंद्र एवं राज्य सरकार के अधिकारीयों के लिए संवेदीकरण कार्यक्रम उद्योगों के लिए उत्पांद संबंधित प्रशिक्षण शैक्षणिक संस्थाएनों में छात्रों के लिए मानक क्लिब शैक्षणिक संस्थाषनों के साथ समझौता ज्ञापन एवं ग्राम.पंचायत संवेदीयकरण कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने देश में गुणवत्ता जागरूकता में शैक्षणिक संस्थागनों एवं शिक्षकों की महत्ता के बारे में जानकारी दी। सुमित कुमार वैज्ञानिक ईनिदेशक एवं प्रमुख भारतीय मानक ब्यूरोए रायपुर ने जानकारी दी की भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा देश भर में 10.000 से अधिक स्टैंडर्ड क्लब स्थापित किए हैए जिनमें पाँच लाख से अधिक विद्यार्थी सदस्यस के रूप में जुड़े हुए है। छत्तीसगढ़ राज्य में 177 शैक्षणिक संस्थानों में स्टैंडर्ड क्लब स्थापित है जिनमें पांच हजार से अधिक विद्यार्थी सदस्य के रूप में जुड़े हुए है। इन क्लाबों के अंतर्गत विभिन्ना प्रकार की गतिविधियां जैसे. मानक लेखन प्रतियोगिताए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं मानकों पर परिचर्चाए उद्योगों प्रयोगशालाओं आदि में एक्स पोजर विजिट के माध्यम से गुणवत्ता एवं मानकीकरण के क्षेत्र मे युवा प्रतिभाओं को सीखने का अवसर मिलता है। भारतीय मानक ब्यूरो रायपुर शाखा कार्यालय के अधिकारियों द्वारा प्रतिभागियों को मानकों के माध्यम से विज्ञान शिक्षण के बारे मे प्रशिक्षण दिया गया जिनमें राहुल कुमार गुप्ता वैज्ञानिक सी उप नदेशक ऋषव सिन्हाए वैज्ञानिक बी सहायक निदेशक और आशीष अग्रवाल वैज्ञानिक बीसहायक दीपक साहू वैज्ञानिक बीसहायक निदेशक शामिल थे।

आरपीएफ ने आरोपी को ऑपरेशन नार्कोस के तहत नशीले कफ सीरफ के साथ गिरफ़्तार किया

रायपुर। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा नशीले पदार्थ की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे ऑपरेशन नार्कोस के तहत वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त रायपुर श्री रमन कुमार के मार्गदर्शन में दुर्ग आरपीएफ़ द्वारा मुखबिर की सूचना पर दिनांक 07/08/2024 को दुर्ग-भिलाई के मध्य रेलवे लाइन किमी न 864/2ए के पास एक व्यक्ति को 02 नग ट्रॉली बैग के साथ देख पूछताछ करने पर उक्त व्यक्ति ने अपना नाम प्रेम प्रकाश नेताम, निवासी पाटन, ज़िला दुर्ग बताया। संदेह होने पर उक्त व्यक्ति को बैग खोलकर दिखाने को कहा गया, दोनों ट्रॉली बैग में कफ सीरफ़ क्रूश्वङ्ग-ञ्ज मिला जिसका कोई वैध कागजात नही होना बताया। उक्त कफ सीरफ के नसीली पदार्थ होने की पुष्टि के लिए ड्रग निरीक्षक दुर्ग को घटनास्थल पर बुलाया गया जिनके द्वारा इसकी पुष्टि की गई। उक्त दोनों ट्रॉली बैग में नसीला पदार्थ होने की पुष्टि होने के पश्चात कुल 508 नग बॉटल (प्रत्येक 100 मीली) को जिसकी अनुमानित बाजार कीमत लगभग रू 91,440/- है ज़ब्त कर उक्त व्यक्ति को एक्ट के तहत कार्यवाही कर दोनो ट्रॉली बैग सहित अग्रिम कार्यवाही हेतु जीआरपी चौकी दुर्ग को सुपुर्द किया गया। जीआरपी चौकी दुर्ग के द्वारा उक्त के संबंध में अपराध क्रमांक 00/24 धारा 8सी और 21सी एनडीपीएस एक्ट दिनांक 07/08/2024 दर्ज किया गया।

जो राष्ट्र के लिए अच्छा हैं, वह कंपनी के लिए भी अच्छा हैं : श्री जिंदल

रायपुर (विश्व परिवार)।। मंदिर हसौद मशीनरी डिवीजन में जिंदल संस्थापक चैयरमैन ओ पी जिंदल की जयंती मनाई गयी ओ पी जिंदल जिन्हे प्यार और सम्मान से बाउजी पुकारा जाता हैं वह एक दूरदृष्टा थे ओ. पी जिंदल की जीवनी उनकी दूरदर्शिता और राष्ट्र के लिए देखे गए सपनो की याद ताजा कराता हैं जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया बाउजी ने अपने कर्मयोग से अनगिनत व्यक्तियों को राष्ट्र निर्माण में सामूहिक योगदान करने के लिए प्रेरित किया उनकी दूरदर्शिता का केंद्र बिंदु एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत था जो पुरे गर्व और स्वाभिमान के साथ विकसित औद्योंगिक राष्ट्र की कतार में खड़ा हो। बाउजी के दूरदर्शी आदर्श और सिद्धांत छ्वस्क्क के लिए निरंतर प्रेणा के स्त्रोत हैं जो हमे न सिर्फ राष्ट्र के निर्माण बल्कि समुदायों के सशक्तिकरण का हौसला भी देते हैं। बाउजी एक जन्मजात इंजीनियर थे उन्होंने स्वदेशी तकनीक पर आधारित जिंदल इंडिया नामक एक पाइप मिल की स्थापना की जिसे आज जिंदल इंडस्ट्रीज के नाम से जाता हैं 1970 में उन्होंने जिंदल स्ट्रिप्स लिमिटेड की स्थपना की और शुरू से ही अनुसन्धान पर ध्यान दिया बाउजी की मौलिक सोच,बदलाव लाने का उनका जूनून और इन सबसे बड़कर भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किये गए उनके प्रयास ने उन्हें मशीनों से बात करने वाले शख्सियत के रूप में विश्व विख्यात कर दिया। उनका जन्म भले ही हरियाणा में हुआ हो लेकिन पूरा भारत उनकी कर्मभूमि था ह्न क्क जिंदल ग्रुप जैसे विशाल औद्योगिक समूह के संस्थापक और अग्रणी राजनेता होने के बावजूद बाउजी ने कभी भी अपने कार्यालय का दरवाजा बंद नहीं रखा आम हो या खास सभी के लिए उनके दरवाजे 24 घंटे खुले रहे। बाउजी ने राजनीति में आकर जनसेवा की एक नई परिभाषा प्रस्तुत की शिक्षा स्वास्थ और लोगो की सम्पन्नता के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया ।

वे तीन बार हिसार के विधायक रहे उन्होंने अपनी मेहनत और प्रतिबद्धता से ह्क्क जिंदल ग्रुप जैसे विशाल औद्योगिक समूह की स्थापना कर राष्ट्र के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्ही के सिद्धांतो और विचारो को जिवंत कर मंदिर हसौद स्तिथ मशीनरी डिवी ?न में उनकी 94 वी जयंती मनाई गयी जहा सुबह भजन कीर्तन के साथ कार्यक्रम की शरुआत की गयी बाउजी को याद कर मशीनरी डिवीजन स्तिथ हेरिटेज पार्क में कारखाने के कर्मचारियों द्वारा बाउजी की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित किये गए साथ ही इस अवसर पर कैंसर जागरूकता एवं स्वास्थ्य शिविर व वृक्षारोपण का आयोजन किया गया तथा माना स्तिथ वृद्धाश्रम में भोजन फल एवं वस्त्रो का वितरण किया गया इस उपलक्ष्य में मशीनरी डिवीजन के अधिकारी सहित कर्मचारी मौजूद रहे ।

बीएसएनएल 5 जी सेवा शुरू करने को लेकर सांसद ने लोकसभा में उठाया सवाल

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ में मोबाइल उपभोक्ताओं को नेटवर्क और महंगे रिचार्ज से हो रही परेशानी के मुद्दे को लोकसभा में उठाया। श्री बृजमोहन अग्रवाल ने संचार मंत्री से छत्तीसगढ़ में क्क्स्ह्रु की 5त्र सेवा की स्थिति पर जानकारी मांगी तथा राज्य में बीएसएनएल के उपभोक्ता और टावर्स की संख्या और राज्य में 5त्र तकनीकि की वर्तमान स्थिति पर सवाल पूछा।

जिसपर संचार एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चंद्र शेखर ने बताया कि, क्क्स्ह्रु जल्द ही छत्तीसगढ़ में भी 5त्र सेवा शुरू करने का योजना बना रहा है इसके लिए एनआईटी, रायपुर और आईआईटी, भिलाई में 5जी यूज केस लैब स्थापित किया गया है। आत्मनिर्भर भारत पहल के अनुरूप बीएसएनएल ने अखिल भारतीय स्तर पर तैनाती के लिए एक लाख स्वदेशी रूप से विकसित 4जी साइ ?टों की खरीदी की है जिनको 5जी में अपग्रेड किया जा सकता है। सितंबर, 2023 से 4जी उपकरणों की आपूर्ति भी शुरु हो गई है। संचार राज्य मंत्री ने यह भी बताया कि, छत्तीसगढ़ में बीएसएनएल के लगभग 19.85 लाख मोवाइल उपभोक्ता और छत्तीसगढ़ में बीएसएनएल के 2,383 मोबाइल टावर हैं, जबकि उपभोक्ताओं की संख्या लगभग 19.85 लाख है।

कृषि विश्वविद्यालय में फसल अमृत से की गई धान की रोपाई

रायपुर (विश्व परिवार)। मनोहर गौशाला खैरागढ़ में निर्मित फसल अमृत और मनोहर आर्गेनिक गोल्ड गोबर खाद का परीक्षण इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर में किया गया। कृषि विश्वविद्यालय में धान की रोपाई के दौरान इसका ट्रायल किया गया। इसकी शुरुआत गौशाला के ट्रस्टी और जीव जंतु कल्याण बोर्ड भारत सरकार के मानद प्रतिनिधि अखिल जैन (पदम डाकलिया) ने की। उन्होंने खेत में उतरकर नवकार मंत्र का जाप कर प्रभु का आशीर्वाद लिया और फिर रोपाई की। डायरेक्टर ऑफ रिसर्च डॉ. विवेक त्रिपाठी के मार्गदर्शन में इसका परीक्षण किया जा रहा है। वहीं कृषि विश्वविद्यालय के प्रोसेफर व नोडल अधिकारी डॉ. एलके श्रीवास्तव की देख-रेख में यह कार्य किया गया। इसका परीक्षण सफल होने पर धरती को रासायनिक खाद से जहर मुक्त करने के लिए वैज्ञानिक फसल अमृत और मनोहर आर्गेनिक गोल्ड गोबर खाद का उपयोग अपने रिसर्च में करेंगे। साथ ही किसानों को इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित करेंगे। बता दें कि फसल अमृत का अब तक 5 लाख से अधिक किसानों को वितरण किया जा चुका है। साथ ही इसका खेतों में उपयोग करने को लेकर प्रशिक्षण भी दिया गया है।

दैनिक विश्व परिवार से जुड़ें...

छत्तीसगढ़ के सबसे विश्वसनीय दैनिक समाचार पत्र एवं वेबसाइट "**दैनिक विश्व परिवार**" से जुड़े और पाए अपनी खबरों को प्रकाशित कराने अवसर।

"**दैनिक विश्व परिवार**" दे रहा है सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में युवा एवं प्रतिभावान पत्रकारों को मौका अपने जिले की हर खबर को प्रमुखता से प्रकाशित कराने का अवसर।

साथ ही छत्तीसगढ़ के समस्त जिले, विधानसभा, ब्लॉक स्तर पर रिपोर्टरों और विज्ञापन प्रतिनिधि की आवश्यकता है। अपनी खबरों को "**दैनिक विश्व परिवार**" के माध्यम से जनता तक पहुंचाए। हमसे जुड़ने के लिए निचे दिए गए नंबर पर करे अपनी खबरे साजा।

सम्पर्क : 99810-93065, 62662-63552

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354